पाक्षिक

RNI NO.MAHHIN/2013/49425

महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

बालिका शिक्षा को बढावा देने के लिए राज्य सरकार प्रयासरत है-मीणा

सृष्टी एग्रो

किसानों की दुर्दशा सुधारने के लिए काम कर रहा है बसंत एग्रो टेक (आई) लिमिटेड

डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015 website:www.srushtiagronews.com

वर्ष : १ अंक - १३ मुंबई, १ अगस्त से १५ अगस्त २०१३ मुल्य-२/- रुपए पृष्ठ -८

मिड-डे मील की एक हकीकत

नई दिल्ली। गंदे पानी से धुले बर्तन। आटा गूंथने की चक्की के पास फैली गंदगी। खाना बनाते समय हाथों में दस्ताने नहीं। भोजन की गुणवत्ता केवल चखकर जांची जाती है। यह काम रसोइया करता है, विशेषज्ञ नहीं। हम बात कर रहे हैं दिल्ली के स्कूलों में परोसे जाने वाले मिड-डे-मील की। जिसे खाकर बच्चें बीमार नहीं होंगे, तो क्या होंगे।

खाना बनाने या पैकिंग करने वाले किसी भी कर्मचारी ने हाथों में दस्ताने नहीं थे। जबकि साफ-सफाई के लिहाज से ऐसा जरूरी है।

रसोई में भोजन की जांच के लिए कोई विशेषज्ञ या डाइटीशियन नहीं है। संस्था से जुड़े लोग ही उसे चखते हैं। वह भी नमक-मिर्च का पता लगाने के लिए।

सरकार की तरफ से संस्थाओं को तीन रुपए ग्यारह पैसे (प्राथमिक वर्ग) व चार रुपए ६३ पैसे (उच्च प्राथमिक वर्ग) की दर से भुगतान किया जाता है। प्राथमिक वर्ग के बच्चों को २५० ग्राम व उच्च प्राथमिक वर्ग के बच्चों के (शेष पृष्ठ ३ पर)

किसानों के लिए राष्ट्रपति जल्द शुरू करेंगे sms portal

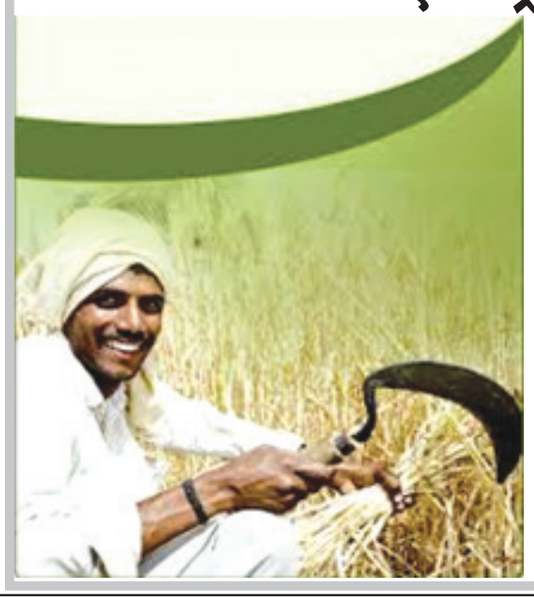

दिल्ली, देश के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी अगले सप्ताह किसानों को लिए 'एसएमएसपोर्टल' का आरंभ करने जा रहे हैं जिसके माध्यम से किसान मौसम, खेती संबंधित बीमारियाँ, डेअरी, पशुपालन, मछली पालन तथा कृषि से सम्बंधित विभिन्न जानकरी हासिल कर सकते हैं। कृषि मंत्रालय द्वारा मिली जानकारी के अनुसार किसान एसएमएस पोर्टल (www.farmer.gov.in) १६ जुलाई को शुरू कर दी गई है । इसका उद्देश्य देश भर के १२ करोड़ किसानों को एसएमएस (sms) के जरिए सूचना, परामर्श और सेवाओं को पहुंचाना है। (शेष पृष्ठ ३ पर)

टमाटर और प्याज की कीमतों में आग

मुंबई : अगर आपके किचन में टमाटर की खपत ज्यादा होती है तो अब उसपर लगाम लगाने का वक्त आ गया है। क्योंकि टमाटर के दाम अचानक से बढ़ गये हैं और वह अब ४० से ५० रुपये किलो तक बिक रहा है। एक तरफ जहां सर्विस टैक्स में बढोत्तरी ने आम आदमी की जेब पर कैची चला दी है वहीं गर्मी के चलते सब्जियों के दाम आसमान छूने लगे हैं। खासकर लाल-लाल टमाटर ने तो सबका चेहरा ही लाल कर दिया है। खास बात यह है कि अबतक आप साब्जियों में टमाटर डालकर रंग लाल करते थे मगर अब टमाटर की कीमतों के बारे में जानकर आपका रंग लाल हो जायेगा। जी हां, देश के (शेष पृष्ठ ३ पर)

योजना आयोग का भद्दा मजाक

नई दिल्ली : कमरतोड़ महंगाई को थामने में नाकाम रही सरकार

ने चुनावी साल में १७ करोड़ गरीब कम करने का चमत्कार कर दिखाया है। ऐसा गरीबों की आमदनी का जरिया बढ़ाकर नहीं बल्कि आमदनी के आंकड़े में हेरफेर कर किया गया है। उनकी आय महज एक रुपये बढ़ाकर एक झटके में १५ फीसद गरीब कम कर दिए गए। पिछले कई सालों से महंगाई भले ही चरम पर हो, लेकिन सरकार की गरीबी परिभाषा में बहुत ज्यादा अंतर नहीं आया है। नई परिभाषा के तहत अब गांवों में रोजाना २६ की जगह २७.२० रुपये और शहरों में ३२ की जगह ३३.३० रुपये से ज्यादा कमाने वाले गरीब नहीं कहे जाएंगे। यानी गांव में हर (शेष पृष्ठ ३ पर)

वीरेंदर मीणा

एक जो जुझारू पुलिस अधिकारी ,१९८७ वो पुलिस सेवा में आये उनके कार्यों नें उन्हें आपने विभाग में तो लोकप्रिय बनाया ही, साथ मे लोगो का कानून पर विश्वास बडाने में मदद की इसी के साथ वो उन्नत्ति लेकर १९७७ में इंस्पेक्टर बने ,अलग अलग विभागों व पुलिस स्टेशनों में कार्य करने के साथ साथ B सुरक्षा व ACB में कार्यरत रहें उन्हके प्रदर्शन को देखते हुए एक बार फीर वीरेंदर मीना उन्नति के साथ DYSP पद पर जयपुर शहर में कार्य करेंगे.

हमारी सब्जियां दुबई में

मुंबई। महाराष्ट्र में उत्पादित हरी सब्जियों व फलों को बड़े पैमाने पर विदेशों में बेचे जाने की तैयारी की जा रही है। इसका असर यह होगा कि फल और सब्जियां और महंगे हो जाएंगे। ज्यादा लाभ अर्जित करने के लिए यह कवायद राज्य सरकार कर रही है। (शेष पृष्ठ ३ पर)

14 करोड़ खर्च हुए सरकारी आयुर्वेदिक बिस्कुट पर

मुंबई। महाराष्ट्र के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में कुपोषण के शिकार बच्चों के लिए राज्य सरकार ने १४ करोड़ रुपये के आयुर्वेदिक बिस्कुट खरीद डाले। विधानसभा में विपक्ष द्वारा घोटाले का आरोप लगाए जाने के बाद सरकार ने इस फैसले का बचाव करते हुए कहा कि ये विस्कुट आंगड़बाड़ियों में वितरित किए जाएंगे। शिवसेना विधायक आरएम वानी द्वारा इस मसले को विधानसभा में उठाने के बाद महाराष्ट्र की महिला एवं बाल विकास मंत्री प्रोफेसर वर्षा गायकवाड़ ने लिखित बयान में फैसले का बचाव किया।

उन्होंने बताया कि आयुर्वेदिक बिस्कुट और नचनी की खरीद ई-टेंडरिंग के जरिये की गई (शेष पृष्ठ ३ पर)

S.S. AGROCHEM (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/Organic Chemicals
CONTACT NO.-022-6710-3722
EMAIL:aarti@hindchem.com

KANHAIYA CHEMICALS
AN ISO 9002 - 2009 COMPANY

KANHAIYA CHEMICALS

SULPHUR 85% DP
SULPHUR 80% WP
SULPHUR 80%
WDG SULPHUR 90%
BENTONITE.

ADDRESS: 76/78,MODI STREET, 307 SAI SADAN, FORT, MUMBAI- 01.
Contact for Enquiry
Mobile No.9930544114/9870077699
Office NO. 22620529

संपादकीय

मि डाय मिल

बिहार में एक स्कूल में मिड डे मिल के कारण बच्चो की मौत व् बीमार होने की खबर क्या आई के ऐसी खबरों के आने का सिलसिला मानो थमने का नाम ही नहीं ले रहा ऐसा जघन्य अपराध जो सोची समाजी हत्याओं की साजिस से भी अधिक खतरनाक है।

भौतिक समाज में सरकार लोगों को शिक्षा नौकरी देने के बजाए मुक्त में खाना,बीमार गाय,लैपटॉप से लेकर टी. वी. तक जैसे चुनावी उपहार देना ज्यादा समझ आता है` यह योजनाए स्वयम उज्वल भविष्य बनानेके सपने को कुंद कर राजनैतिक दलों के रहमो करम पर जीने के लिए मजबूर कर देती है यही वर्ग सरकारों का वोट बैंक है ,और यही समर्थक सरकारे बदल जाती है नहीं बदलते तो इन वर्गो के हालत .....

भीख....भीख है इस मनोदशा का असर दूर तक जाता है योजना आयोग जब यह कहता है ,की एक आदमी २६ रुपये में प्रतिदिन में अपना पेट भर सकता है,तो इसमे उसकी मानसिकता झलकती है उसे पेट भरने के लिए अच्छे भोजन की आवशकयता ही कहा है?मंत्री या सरकारी अधिकारी ५ रुपये में अन्नपूर्ण योजना के तहत दाल -चावल देकर आपने आपको शाबाशी देने से नहीं थकते ,जी, यह सरकार की मेहरबानी हैं जो मिलाता है....जैसा मिलाता हैह्न. खाइए और वोट दीजिये ...क्या हम स्वतंत्र भारत में है ? चाहे वो केंद्र सरकार हो या राज्य सरकार उनकी इस कुंठित मानसिकता से हम सभी कभी न कभी दो-चार होते हैं` सस्ते या मुफ्त में दिया जा रहा भोजन शिबिर ,मनरेग जैसी अनगिनित योजनो को भ्रष्टाचार की दीमक लगी हुई है ,अधिकतर मामलों में गरीबों को दिए जाने वाला खाद्य धान सडागला न खाने लायक ही होता हैं`सरकारी तंत्रों को एक बार भी यहाँ नहीं लगता की इस खाने को खाने वाले मनुष्य ही हैह्न..हा जब कही कोई हादसा होता है अचानक जाच कमेटीओं की, चिंतित बयानों की, बाढ़ सी आ जाती है ,और वही गरीब वर्ग कुछ समय बाद फिर उसी चक्र का हिस्सा बन जाता हैं जाए तो जाए कहा?..... .इस अन्नदाता से बचकर....

ऋतू कपिल

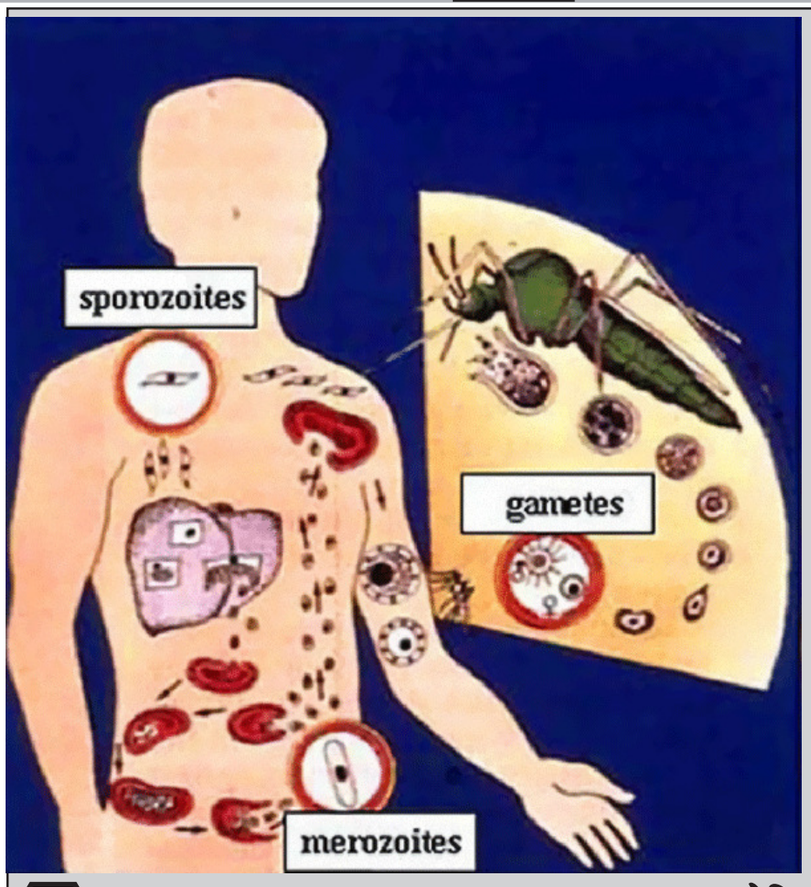

बरसात के कारण शहर मलेरिया और डेंगू से परेशान

बरसात के इस मौसम में डेंगू और मलेरिया धीरे-धीरे नागरिकों को अपनी चपेट में ले रहा है। मनपा स्वास्थ्य विभाग द्वारा ४२,९४८ रक्त नमूनों की जांच की गई, जिसमें २४ मलेरिया के मरीज पॉजीटिव पाए गए। इसी तरह २४ संदिग्ध नमूनों में डेंगू के ७ पॉजीटिव पाए गए। नागपुर जिले में डेंगू के ७ तथा मलेरिया के ४४ मरीज पाए गए।

शहर तथा जिले में डेंगू के १४ और मलेरिया के ६८ रोगियों की संख्या दर्ज की गई। मनपा स्वास्थ्य विभाग द्वारा मलेरिया जांच अभियान में १ जनवरी से ३० जून के बीच ४२,९४८ रक्त नमूने इकट्ठे किये गए थे। जिनमें २४ नमूने पॉजीटिव पाए गए। इसी तरह डेंगू के २४ संदिग्ध नमूनों की जांच में ७ डेंगू प्रभावित निकले। मनपा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष मौसमी बीमारियों से बचने के लिए अनेक सावधानियां और उपाय सुझाए जाते हैं। इसके बावजूद बारिश में मलेरिया और डेंगू के मरीजों की संख्या कम होती नजर नहीं आ रही है। नागरिकों में इन बीमारियों के लिए आवश्यक जागरुकता और सावधानी का अभाव, प्रमुख कारण बताया गया है।

-:मलेरिया से बचाव:-

जिला मलेरिया अधिकारी डा. बंडू पारधी के अनुसार इस मौसम में बुखार आने पर अनदेखी घातक साबित होती है। बुखार या बेहोशी आने पर तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। जिले में स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा रक्त जांच की व्यवस्था की गई है। डाक्टरों की सलाह अनुसार दवाएं लेनी चाहिए। मरीज को भूखे पेट नहीं रहने दें। मलेरिया ग्रस्त घोषित ग्राम के प्रत्येक घर में दवाई के छिडकाव के बाद ६ सप्ताह तक दीवारों की पुताई नहीं करने तथा मच्छरदानी का प्रयोग करने की सलाह दी गई है। इसी तरह घर के आसपास का परिसर स्वच्छ रखने, पानी के गड्ढ़दुनचे, पुराने टायर, बर्तन आदि हटाने, जमा पानी मेंकेरोसिन का फव्वारा मारने, जमा पानी में गप्पी मछली डालने तथा बाहरी उपयोग के लिए बनाए गए पानी के टांके, कूलर आदि नियमित साफ करने की सलाह दी गई है।

शहर के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में मलेरिया और डेंगू के मरीजों की संख्या में वृद्घि पाई जा रही है। हालांकि गत वर्ष की तुलना में इन बीमारियों के मरीज कम पाए जा रहे हैं, जबकि बारिश खत्म होने में २ माह बाकी है। आगामी अवधि में मरीजों की संख्या में वृद्घि की आशंका जताई गई है। स्वास्थ्य उपनिदेशक कार्यालय के अनुसार राष्ट्रीय कीटजन्य रोग नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत छेडे गए जांच अभियान में अब तक डेंगू के ७ मरीज पाए गए हैं। जिले में स्वास्थ्य विभाग द्वारा २८ संदिग्ध नमूने जांच के लिए भेजे गए थे। वर्ष २०१२ में अगस्त से दिसंबर के बीच ३७२ रक्त नमूने इकञ्ट्नचे किए गए थे। इनमें १०३ डेंगू के मरीज पाए गए थे। अब तक पाए गए रोगियों में मोहपा (वाठोड़ा) के ३ तथा भांडारबोड़ी के ४ मरीजों का समावेश है।

जिला मलेरिया विभाग द्वारा चलाए जा रहे मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत अप्रैल से जून के बीच ३६,२२१ रक्त नमूना की जांच में मलेरिया के ४४ रोगी पाए गए। वर्ष २०१२ में ३३,७२८ रक्त नमूनों की जांच की गई थी, जिनमें ४६ पॉजीटिव पाए गए थे।

अगर मछली तेल से बना आहार ले रहे हैं तो छोड़ दें!

मछली तेल से बने पूरक आहार की तुलना में मछली खाना स्वास्थ्य के लिए ज्यादा बेहतर होता है। हाल ही में हुए एक शोध में यह तथ्य सामने आया है।

हालांकि मछली तेल में पाया जाने वाला ओमेगा-३ वसा अम्ल मानव शरीर के स्नायु तंत्र, हृदय रक्षा प्रणाली जैसे विभिन्न तंत्रों को मजबूत बनाता है, लेकिन इसी तरह के एक वसा अम्ल 'डोकोसाहेक्जोनिक(डीएचए)' की प्रक्रिया विधि और उससे उत्पन्न होने वाला प्रभाव, स्वास्थ्य के लिहाज से अभी अनसुलझा व अनुत्तरित है। पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालय के शरीर क्रिया विज्ञान के प्रवक्ता तोशीनारी होशी और उनके सहयोगियों ने मछली के तेल पर अध्ययन किया कि कैसे यह शरीर के रसायन संवाहन प्रक्रिया को प्रभावित कर रक्तदाब को कम करता है। टीम ने पाया कि डीएचए रक्तदाब को बड़ी तेजी और प्रतिक्रियात्मक तरीके से लगभग २० गुना तेज कर रक्त और आयन संवहन प्रक्रिया को सक्रिय करता है। चूहों पर किए गए अध्ययन के बाद तुलनात्मक रूप से अध्ययनकर्ता टीम ने पाया कि मछली तेल से बनी अधिकतर दवाइयों में डीएचए एथिल एस्टर पाया जाता है जो कि रक्त और रसायन वाहक तंत्र को सक्रिय करने में नाकाम रहा। इतना ही नहीं यह रसायन डीएचए के सकारात्मक प्रभाव को भी को नष्ट कर देता है।

एक सशस्कत मिशाल है -अर्चना ताई

व्यक्तित्व

पुणे : ६०० किमी दूर यवतमाल जिले में पोखरी की सरपंच अर्चनाताई के साथ भेदभाव किया गया था।

दो साल पहले अर्चनाताई ने गावं में विकास कार्यो के लिए निविधाओं में हेरफेर और भ्रष्टाचार के विरोद आवाज उठाई उसके लिए उन्हें अनंगिर्निट परिणाम भोगतने पड़े उन्हाको और गंभीर परिणाम भोगतने की चेतावनी दी गईं

लेकिन अर्चनाताई इन्ह धमकियों से डरी नहीं और उन्होंने आपने गावं को एक आदर्श गावं बनाने की ठानीं`उन्होंने सुशाशन प्रथाओं को शुरू किया उन्हके कामों का परिणाम आज ये है के आज पोखरी राज्य और केंद्र सरकार से लाभ लेकर महाराष्ट्र में एक आदर्श गावं बना अर्चनाताई सभी संरपंच के लिए एक मिसाल हैं`वो एक उदाहरण है उन्हें महिला नेताओं के लिए जो भ्रष्टाचार के खिलाफ पंचायती स्तर पर भी लाध रही है उन्हाकी लड़ाई एक लोकप्रिय आंदोलन का आकर ले रही है उसी का परिणाम राज्य सरकार ने पंचायती स्तर पर ५० प्रतिशत तक महिलों के लिए आरक्षण बढाया जाएगा। अर्चनाताई ने बताया की .....'हमें विश्वास करना चाहिए बिना भ्रष्टाचार के भी विकास की योजनाए लागु हो सकती हैं` इसी विश्वास के साथ हम भ्रष्टाचार से लड़ सकते है मेने एक भी पैसा दिए बिना आपने मतदातों की सेवाकर पंचायत चुनाव लड़ा मैंने उन्हें अच्छा साशन देने का वादा किया और उन्होंने मुझपे विश्वास दिखाया' वह दो वर्षो तक लगातार सरपंच चुनी गईं` वह एक पैसा दिए व् लिए बिना सरकारी योजनाओ को गाव में लागु किया पर्यावरण के लिए काम जलप्रबंदन के लिए काम ,छोटे व्यवसाय और कुटीर उद्योगों के लिए स्वयं सहायता समूहों का गठन किया। यहाँ पर मेरी यत्रो ख़त्म नहीं होती एक आदर्श गावं बनाने की एक आदर्श जीवन जीने की यात्रा शुरू होती है ....

.ममता म्हात्रे

एक प्रखर व्यक्तित्व... ओम कृष्ण बिरला

ओम कृष्ण बिरला राजस्थान की राजनिती में किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं वह एक लोकप्रिय राजनेताओं के रूप में जाने जाते हैं। उनकी राजनीति, सामाजिक उदार नीतियों से ओत-प्रोत है। कोटा उनकी जन्मभूमि भी है और कर्मभूमि भी है। वे एक ऐसे नेता है, जिन्हें सामाजिक हित में कार्य करने के लिए किसी पद की आवश्यकता नहीं ,यथापि वह अखिल भारतीय जनता युवा मोर्चा (लगातार ६ वर्ष तक) राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे,उसके बावजूद वह भारतीय जनता युवा मोर्चा राजस्थान प्रदेश में 'प्रदेशाध्यक्ष' रहे,भारतीय जनता युवा मोर्चा (४ वर्ष)' जिलाध्यक्ष' रहे, राष्ट्रिय सहकारी उपभोक्ता संघ ल.नै दिल्ली में वाईस चेयरमेन रहे, राजस्थान राज्य सरकारी उपभोक्ता संघ लि. जयपुर में 'चेयरमेन' रहे, कोटा सहकारी उपभोक्ता होलसेल भंडार लि कोटा में 'चेयरमेन' रहे,नॅशनल कोल इंडिया लि नई दिल्ली में 'डायरेक्टर' रहे, नेहरू युवा केंद्र , नई दिल्ली में 'डायरेक्टर' रहे,राज्य वाणिज्य महाविद्यालय ,कोटा (राज.) में सयुक्त सचिव रह।

मात्र १७ वर्ष की आयु में सन १९७९ में राजकीय उच्च माध्यमिक विधायक गुमान पूरा कोटा के छात्रसंघ अध्यक्ष हुए है इसी के साथ उन्होंने राजस्थान की राजनीती में २००३ में बारहवी राजस्थान विधान सभा हेतु कोटा नगर में विधायक निवार्चित हुए ३१ मई २००४ को राजस्थान साकार के संसदीय सचिव (राज्यमंत्री) के पद की शपथ ली।

इसी के साथ उन्हाकी कभी न ख़त्म होने वाली उपलब्धता सूचि है।

◆नेहरू युवा केंद्र के माध्यम से संम्पूर्ण देश के ग्रामीण क्षेत्रो में खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजन की वृहद योजना बनाकर ग्रामीण प्रतिभाओं का विकास करने के अभियान का नेतृत्व किया

◆ राजस्थान के बारां जिले के सहरिया आदिवासी क्षेत्र में कुपोषण व् अर्ध्दबेरोजगारी को समाप्त करने के कार्य का नेतृत्व कियों

◆२६ जनवरी २००१ को गुजरात में आये भयंकर भूकंप पिधितों की सहायतार्थ चिकित्सकों सहित लगभग १०० से अधिक स्वंयंसेवक के रहत दल नेतृत्व करते हुए लगातार १० दिनों तक दिन रात भूकंप पीड़ितों की सहायता की तथा उन्हें खाद्य एवं चिकित्सा सामग्री वितरित की।

◆ समय-समय पर विभिन्न अवसरों ,जयान्तियो एव आवश्यकता अनुसार रक्तदान शिबिरों का आयोगन कराकर रक्त संग्रह करवाया ।

◆राष्ट्रिय उपाध्यक्ष ,भारतीय जनता योवा मोचा ,दल्ली के पद पर कार्यरत रहते हुए संपूर्ण भारत में राष्ट्र सेवा का संचार किया।

◆वाइस चेयरमेन राष्ट्रिय सहकारी उपभोगाकता संग ली. नई दल्ली के पद कार्यरत रहते हुए सुपर बाजार योजना का संपूर्ण भारत वर्ष में जल बिछाने की योजना चलाई ।

◆ सहकारी आन्दोलन में नव जन जागरण का नेतृत्व किया।

◆राज्य के सभी पेशनर्स रोगियों के निशुल्क दावा वितरण का कर प्रारंभ किया ।

◆ मृत प्राय :कोटा शहर उपभोक्ता भंडार लिमिटेड को पुर्नजिवित कर नई कल्याण करी योजनाओं का शुभारंम्भ किया।

◆एक ही छत के निचे सस्ते एव अच्छे सामान का आम जनता को उपलब्ध करने की उपहार केंद्र योजना का शुभारम्भ किया,जिससे राज्य में सहकारिता आन्दोलन को नए आयाम मिले ।

इसी के साथ वो कही सामाजिक हित में आन्दोलन में रहे, जहा राजनीती में लगातार गिरते हुए मूल्य व् राजनेताओं की असंवेदन शीलता सामने आतीहैं वाही एक मर्यादित लोकप्रिय सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरुक नेता का नाम है 'ओम कृष्ण बिरला

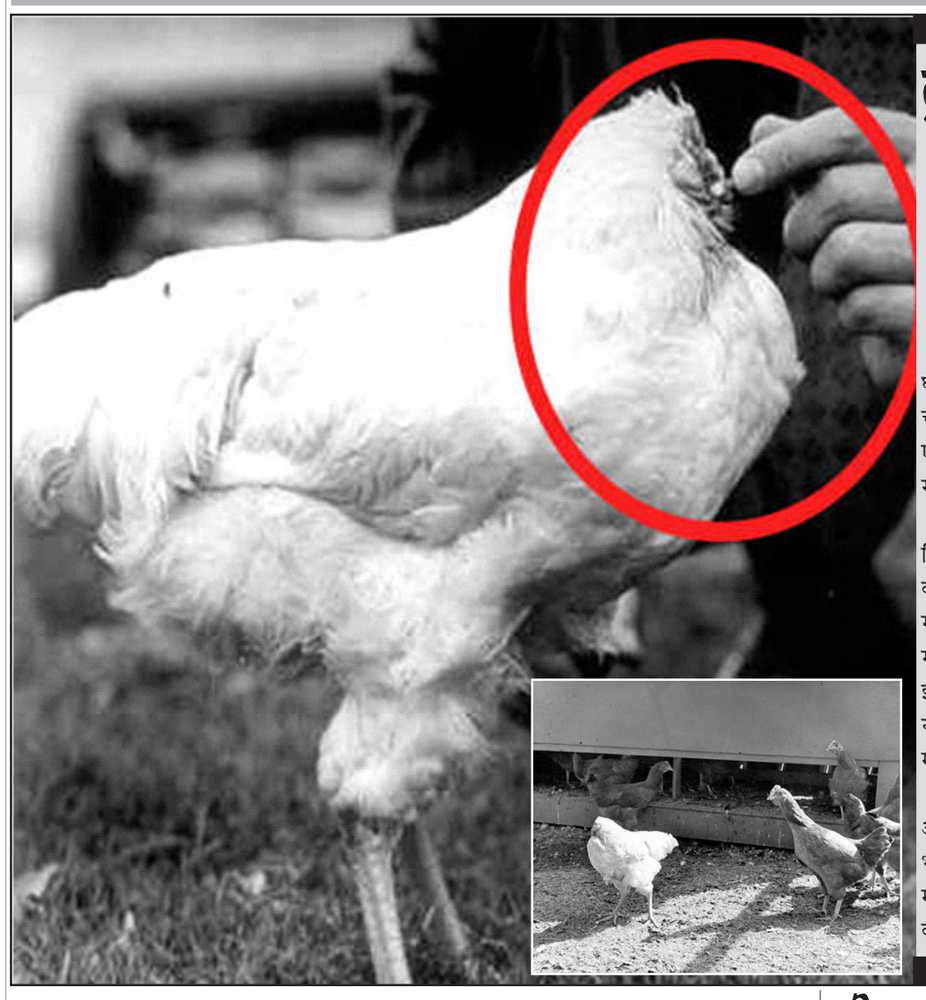

दुनिया का वह सबसे विचित्र मुर्गा, यमराज के हाथों से छीन लाया अपने प्राण

१० सितंबर, १९४५ को एक ऐसी घटना घटित हुई, जिसने दुनियाभर के जीव विज्ञानियों को चकित कर दिया। अमेरिका के फ्रूटा कोलोरेडो में एक मुर्गे ने बिना सिर के कई महीनों तक जीवित रहकर पूरी दुनिया को चकित कर दिया था।

हुआ कुछ यूं कि फ्रूटा कोलोरेडो में रहने वाले किसान लोयड ऑल्सन ने अपने साढ़े पांच महीने के मुर्गे माइक को खाने के लिए कुल्हाड़ी से उसकी गर्दन काट दी। लेकिन ऑल्सन उस वक्त चकित रह गया, जब माइक सिर कटने के बाद भी जीवित था। इस मामले में अदुभुत और हैरान करने वाली बात यह थी कि धड़ से सिर अलग होने के बावजूद माइक १८ महीनों तक जीवित रहा।

माइक के जीवित रहने की प्रबल इच्छा देखकर ऑल्सन ने उसे खाना और पानी पिलाने का तरीका भी ढूंढ निकाला। ऑल्सन ने 'आईड्रॉपर' के जरिए माइक को खाना खिलाना और पानी पिलाना शुरू कर दिया।

वर्ष २०१६-१७ तक भारत दूध की १५ करोड़ टन की अनुमानित मांग पूरी करने में सक्षम होगा-शरद पवार

-चालू पंचवर्षीय योजना के अंत तक संगठित क्षेत्र द्वारा दुग्ध प्रबंधन में ५० प्रतिशत की वृद्धि होगी

-भारत डेयरी शिखर सम्मेलन २०१३ का उद्घाटन

कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री शरद पवार ने आज इस बात की पुष्टि की कि दूध और दूध से बने उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने में २२०० करोड़ रुपये के निवेश वाली महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय डेयरी योजना से मदद मिलेगी। वर्ष २०१६-१७ तक देश में दूध की जरूरत बढ़कर १५ करोड़ टन हो जाने का अनुमान है।

भारत डेयरी शिखर सम्मेलन २०१३ को सम्बोधित करते हुए श्री पवार ने कहा कि वर्तमान में १२ करोड़ ८० लाख टन दूध उत्पादन की क्षमता के साथ भारत दुग्ध उत्पादक देशों के बीच अग्रिम स्थान रखता है। इस योजना के तहत इसमें २ करोड़ २० लाख टन की वृद्धि करने के लिए उत्पादकता बढ़ाने, दूध को खरीद कर बाजार तक पहुंचाने के लिए ग्रामीण स्तरीय ढांचे का विस्तार किया जाएगा और उसे सशक्त बनाया जाएगा।

योजना के बारे में विस्तार से बताते हुए श्री पवार ने कहा कि इसके तहत अनुवांशिक संभावनाओं वाले दुधारू मवेशियों की संख्या बढ़ाना, जरूरत के मुताबिक अच्छे बैल जुटाना, उच्च गुणवत्ता वाला फ्रोजन सीमन बनाना, प्रबंधन की वैज्ञानिक पद्धतियों को बढ़ावा देना, रोगों पर कारगर ढंग से काबू पाने के लिए उपयुक्त जैव सुरक्षा उपाय अपनाना शामिल है। यह योजना एनडीडीबी और कार्यान्वयन एजेंसियों के माध्यम से लागू की गई है। एनडीपी-१ में देश के कुल दुग्ध उत्पादन की ९० प्रतिशत से ज्यादा मात्रा का उत्पादन करने वाले १४ प्रमुख दुग्ध उत्पादक राज्यों पर ध्यान दिया गया है, इनमें उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, ओडिशा और केरल शामिल हैं। एनडीपी का कार्यान्वयन हालांकि गुणवत्ता वाले बैलों की उपलब्धता और वीर्य तथा बेहतर प्रबंधन पद्धतियों के संदर्भ में सभी राज्यों के लिए फायदेमंद होगा।

श्री पवार ने इस बात पर जोर दिया कि और ज्यादा किसानों को संगठित क्षेत्र के दायरे में लाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत के डेयरी क्षेत्र के त्वरित विस्तार का श्रेय सहकारी आंदोलन को जाता है। आज करीब डेढ़ करोड़ किसान डेढ़ लाख ग्राम स्तरीय डेयरी सहकारी समितियों के तत्वावधान में संगठित क्षेत्र के दायरे में हैं। भारत ने सहकारी और निजी क्षेत्र दोनों में दूध और दूध से बने उत्पादों की खरीद, प्रसंस्करण और विपणन की पर्याप्त क्षमता हासिल की है। इस समय करीब ३० प्रतिशत बिक्री योग्य अतिरिक्त दूध का विपणन संगठित क्षेत्र के माध्यम से किया जाता है। इस पंचवर्षीय योजना की समाप्ति तक कम से कम ५० प्रतिशत दूध का प्रबंधन संगठित क्षेत्र द्वारा कराने का लक्ष्य तय करना होगा। देश में दूध और दूध से बने उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसानों से खरीदे गए दूध को ठंडा रखने के लिए कोल्ड चेन सुविधा तैयार करने की दिशा में निवेश के लिए सहकारी और निजी क्षेत्र दोनों को आगे आना होगा।

रावते के निलंबन व सिंचाई घोटाले पर बहस के लिए तैयार

मुंबई। सिंचाई घोटाले पर चर्चा कराने और विधायकों के निलंबन के मुद्दे पर विपक्ष की गांधीगीरी के सामने सरकार को झुकना पड़ा। शिवसेना विधायक दिवाकर रावते का निलंबन वापस लेने और सिंचाई घोटाले पर विधान परिषद में चर्चा कराने पर तो सरकार कल दोपहर ही तैयार हो गई थी। पेंच फंसा था मनसे विधायक प्रवीण दरेकर का निलंबन रद्द करने को लेकर। इस मुद्दे पर विधानसभा स्थगित होने के बाद भी विपक्ष के सदस्य देर रात तक सदन में जमे रहे। आखिर सरकार को झुकना पड़ा। इसके बाद ही विपक्ष ने अपना ठीया आंदोलन वापस ले लिया। विपक्ष की गांधीगीरी का असर पहले विधान परिषद में दिखाई दिया। सभापति शिवाजीराव देशमुख, मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, उपमुख्यमंत्री अजित पवार उद्योग मंत्री नारायण राणे व विपक्ष के नेता विनोद तावड़े के साथ हुई बैठक में सिंचाई पर चर्चा कराने और रावते का निलंबन रद्द करने पर सहमति बन गई। सदन की कार्यवाही शुरु होते ही तावड़े ने रावते के निलंबन व सिंचाई घोटाले पर चर्चा का मसला उठाया। विपक्ष अड़ गया कि जब तक उसकी मांगें नहीं मानी जातीं, सदन की कार्यवाही नहीं चलने दी जाएगी।

तावड़े सहित सभी विपक्षी सदस्य सदन के फर्श पर बैठे गए और 'मुंह बंद आंदोलन्य शुरु कर दिया। सभापति ने उन्हें समझाने की कोशिश की लेकिन विपक्ष अपनी मांग पर अड़ा रहा। इस बीच उद्योग मंत्री नारायण राणे और राष्ट्रवादी कांग्रेस के हेमंत टकले ने कहा कि पहले विपक्ष सदन की कार्यवाही में हिस्सा ले, फिर उसकी मांगों पर चर्चा होगी। उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने कहा कि कुछ मुद्दे हैं जिनपर चर्चा कराना जरुरी है। विदर्भ में अतिवृष्टि से कितना नुकसान हुआ? राज्य सरकार मुआवजे के लिए क्या कदम उठा रही है? पवार ने कहा कि सरकार सिंचाई पर बहस कराने तैयार है। सिंचाई पर विस्तृत चर्चा कराई जाएगी।

डैम टूटा, पांच सिंचाई इंजीनियरों की मौत

नासिक महाराष्ट्र। सिंचाई विभाग के पांच इंजीनियरों की सोमवार की दोपहर १.३० बजे चांदवड तालुका स्थित चिंचवे गांव में सिंचाई विभाग के एक चेक डैम (मिट्टीरोधी बांध) की दीवार ढह जाने से मलबे में दबकर मौत हो गई। दुर्घटना का शिकार हुए इंजीनियर चेक डैम से हो रहे पानी के रिसाव का निरीक्षण करने और उसकी मर मत करने के लिए आये हुए थे। इस हादसे में जिन इंजीनियरों की मौत हुई है। उनकी पहचान हिरालाल पाटिल, ?आहेर, सोनावणे, प्रदीप सूर्यवंशी और ए..शेलके के रूप में हुई है। शुरुआती दौर में चेक डैम की दीवार ढहने की घटना में तलबे में कुछ मजदूरों के भी दबे होने की आशंका जताई जा रही थी। परंतु देर शाम मलबे को हटाने का काम पूरा होने पर उसमें कोई भी मजदूर दबा नहीं पाया गया। बता दें कि दुर्घटनाग्रस्त चेक डैम का निर्माण कुछ महीने पहले ही किया गया था। जिसकी वजह से उसके एक हिस्से की दीवार ढहने की घटना पर सिंचाई विभाग में तरह-तरह की चर्चा है। वैसे महाराष्ट्र में किसी नये बने चेक डैम की दीवार ढहने और उसके मलबे में दब कर सिंचाई विभाग के पांच इंजीनियरों की मौत होने की यह पहली ही घटना होने की चर्चा जोरों पर है। राज्य सरकार ने इस घटना की जांच का आदेश दिया है।

कृषि कनेक्शनों में सह खातेदारों की सहमति आवश्यक नहीं

जयपुर, 30 जुलाई। अजमेर विद्युत वितरण निगम लि. के क्षेत्राधीन जिलों में अब दिए जाने वाले कृषि कनेक्शनों के आवेदकों द्वारा संयुक्त जमीन होने पर सह-खातेदारों को सहमति देने की आवश्यकता नहीं हैं। निगम के प्रबंध निदेशक श्री पी.एस. जाट ने बताया कि डिस्कॉम की समन्वय समिति की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार कृषि कनेक्शन आवेदकों द्वारा संयुक्त जमीन होने पर सह-खातेदारों की सहमति की आवश्यकता के बारे में कृषि कनेक्शन नीति, 2004 के अनुसार ही कार्यवाही करने के निर्देश दिए गये हैं।

किसानों की दुर्दशा सुधारने के लिए काम कर रहा है बसंत एग्रो टेक (आई) लिमिटेड

बसंत एग्रो टेक (आई) लिमिटेड, नवीन अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्थायी कृषि के लिए प्रतिबद्ध एक अग्रणी कृषि व्यवसाय कंपनी. कंपनी बकाया फसल समाधान के माध्यम से एक बेहतर दुनिया के लिए बेहतर खाना देने, और एक कृषक समुदाय की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापक अनुसंधान एवं विकास और प्रतिपादन गुणवत्ता के बीज, खाद और सेवाओं के माध्यम से किसानों की दुर्दशा सुधारने के लिए लगातार काम कर रहा है में विश्वास रखता है. बसंत एग्रो टेक (आई) लिमिटेड एनपीके मिश्रित उर्वरक, सिंगल सुपर फॉस्फेट, 'कृषि संजीवनी 'ब्रांड नाम के तहत माध्यमिक पोषक तत्व और गुणवत्ता के बीज के विनिर्माण, विपणन और वितरण में लगी हुई है. कंपनी ने भी अपने हवा मिलों के माध्यम से, हरी बिजली उत्पादन के कारोबार में लगी हुई है. बसंत एग्रो टेक (आई) लिमिटेड में, हम समृद्धि में प्रवेश करने के लिए भविष्य और नवाचार करने में मेंढक कूद आनुवंशिकी का उपयोग करें. पारंपरिक प्रजनन के प्रिंसिपलों के साथ जारी रखते हुए, हम वर्षों सें सफलतापूर्वक तेजी से हमारी फसल अनुसंधान ट्रैक करने के लिए नवीनतम तकनीकी नवाचारों को अपनाया है. तेजी से बदलते भविष्य विपणन परिदृश्य, बसंत एग्रो टेक (आई) लिमिटेड के साथ तालमेल रखते हुए जैविक और अजैविक कारकों के प्रतिरोध के लिए ट्रांसजेनिक फसल के विकास के लिए जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान के क्षेत्र में कदम रखा है. मूल्य जैव प्रौद्योगिकी लक्षण जोड़ी के लिए हम ईंब्ब्द मोनसेंटो बायोटेक जैसे प्रमुख और बहुत ही बेहतरीन प्रौद्योगिकी नवाचार कंपनियों में से कुछ के साथ रणनीतिक गठबंधन में प्रवेश किया है.देश भर में हम संकर बाजरा में नेतृत्व की स्थिति का आनंद लें और मक्का, बाजरा, सूरजमुखी और सब्जियों की फसलों की श्रेणी में प्रमुख खिलाड़ी हैं. बसंत द्वारा विकसित संकर के कई पल मारा जा रहा है और किसानों के मन में शीर्ष पर होना करने के लिए जारी कर रहे हैं.

पृष्ठ १ का शेष

मिड-डे..

लिए ३७५ ग्राम भोजन परोसा जाता है। संस्थाओं को गेहूं व चावल मुफ्त में मिलता है। निगम स्कूलों में दिए जाने वाले भोजन को बच्चे लगा देते है नालियों में ठिकाने।

दिल्ली से आए विजिलेंस आइजी ने की पूछताछ :-

मिड डे मील से एक साथ २३ बच्चों की मौत से दिल्ली भी दहल गई है। दिल्ली विजिलेंस के आइजी जो चिकित्सक भी है, ने आकर मरीजों से पूछताछ की और इलाज के बारे में पूरी जानकारी ली। छपरा डीएसपी ने खाना तैयार करने वाली मंजू देवी व पानो देवी का बयान लिया।

हमारी सब्जियां...

महाराष्ट्र सरकार दुबई में फल-सब्जियां और अनाज बेचने की तैयारी कर रही है। ये फल-सब्जियां सीधे किसानों से खरीदी जाएंगी। इसके बाद तय जगह पर सरकार की ओर से दुबई के उपभोक्ताओं को इनकी बिक्त्री की जाएगी। इसके लिए राज्य सरकार ने दुबई में अपना कार्यालय शुरू करने का फैसला किया है। राज्य के कृषि आयुक्त उमाकांत दांगट ने इसकी पुष्टि की है।

किसानों के लिए....

इस सेवा को पाने के लिए किसानों को टोल फ्री नंबर १८००-१८०-१५५१ पर कॉल करके अपने को पंजीकृत कराना होगा। जिससे सीधे किसान वेबसाइट से जुड़ सकता हैं

मुंबई।। महाराष्ट्र सरकार ने एक अध्ययन रिपोर्ट के हवाले से गुरुवार को विधानसभा में

बताया कि शहर के निचले इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति पैदा होने की संभावना है।

एनसीपी के एक विधायक की ओर से किए गए सवाल के लिखित जवाब में राज्य के पर्यावरण मंत्री संजय देवताले ने सदन को बताया कि ' दि एनर्जी ऐंड रिसोर्सेज इंस्टिट्यूट ' (टेरी) ने राज्य सरकार को सौंपी गई अपनी प्राथमिक रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि २६ जुलाई २००५ को मुंबई में जिस तरह बाढ़ आई थी , वैसी ही स्थिति फिर पैदा हो सकती है।

एनसीपी विधायक ने सवाल किया था कि २६ जुलाई २००५ को मुंबई में जिस तरह बाढ़ आई थी , क्या इस बार फिर उसी तरह की स्थिति पैदा हो सकती है। मंत्री ने कहा कि टेरी द्वारा अंतिम रिपोर्ट सौंपने के बाद इसकी सिफारिशें बीएमसी के पास भेजी जाएंगी , ताकि वह इस दिशा में कार्रवाई कर सके।

मौसम की भविष्यवाणी, फसल उत्पादन, कृषि योजना, बीमारियों, कीटआक्रमण और उत्पादों के विपणन जैसी विभिन्न सूचनाएं एसएमएस के द्वारा दी जाएंगी। उर्वरकोंका चयन और मिट्टी परीक्षण के परिणाम सभी तरह की कृषि संबंधी सहायता सरकार की ओर सेकिसानों को उपलब्ध कराई जाएगीं किसानों को समय समय पर बाजार के विषय में जानकारीमिलती रहेगी किसके माध्यम से वह अपने उत्पाद का सही दाम में सौदा कर सकते है। इस पोर्टल पर सभी भाषाओं में जानकरी और परामर्श प्राप्त होंगें

टमाटर और प्याज...

अलग-अलग शहरों में टमाटर के भाव आसमान छू रहे हैं। कुछ दिन पहले तक १० से १५ रुपये किलो बिकने वाला टमाटर अब ४० से ५० रुपये किलो तक मिल रहा है। यूपी में सब्जी के बड़े कारोबारियों की मानें तो आजकल मंडी में कम आवक की वजह से टमाटर के भाव बढ़े हैं। वहीं, कुछ सब्जी विक्रेताओं का कहना है दिल्ली-एनसीआर की मंडियों में अभी अहमदाबाद से टमाटर आ रहे हैं और इतनी दूर से माल आने की वजह से कीमत में बढ़ोतरी हुई है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में भी टमाटर ३६ से लेकर ४० रुपये तक किलो मिल रहा है।

योजना आयोग...

महीने ८१६ रुपये और शहरों में १००० रुपये से ज्यादा कमाने वाले इस मुगालते में रहें कि वो सरकार की नजरों में गरीबी रेखा से ऊपर उठ चुके हैं।

गरीबी रेखा के नए सरकारी मानकों के मुताबिक मनरेगा जैसी योजनाओं में अगर हर महीने कोई व्यक्ति दस दिन का रोजगार भी पा जाए तो वह गरीबी रेखा से ऊपर उठ जाएगा। नई गरीबी रेखा भी उसी तेंदुलकर फार्मूले पर तय हुई है जिस फार्मूले के तहत दो साल पहले सितंबर २०११ में गांव में रहने वालों के लिए २६ रुपये और शहरों के लिए न्यूनतम ३२ रुपये प्रति दिन की आमदनी निर्धारित की गई थी। उस वक्त इसकी तीखी आलोचना के बाद सरकार ने इस फार्मूले को खुद ही खारिज कर दिया था।

इसके बाद सरकार ने गरीबी रेखा का नया फार्मूला तय करने के लिए जून २०१२ में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के चेयरमैन सी. रंगराजन की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समूह गठित किया था। मगर चुनावी साल को देखते हुए सरकार ने अगले साल के मध्य तक आने वाली रंगराजन समिति की रिपोर्ट का इंतजार करना मुनासिब नहीं समझा। लिहाजा तेंदुलकर फार्मूले के आधार पर ही गरीबी रेखा तय कर दी गई। नए आंकड़े मंगलवार को योजना आयोग ने जारी किए।

नई गरीबी रेखा २०११-१२ की कीमतों के आधार पर तय की गई है। इसके मुताबिक गांव में रहने वाला पांच सदस्यीय परिवार अगर रोजाना १३६ रुपये या महीने में ४०८० रुपये कमाता है तो वह गरीब नहीं माना जाएगा। इसी तरह शहर में १६६.५ रुपये रोजाना या ५००० रुपये महीना कमाने वाला परिवार गरीब नहीं कहलाएगा। नए आंकड़ों के मुताबिक अब देश में २२ फीसद ही गरीब हैं। गरीबों की संख्या का अनुमान योजना आयोग ने साल २०११-१२ के आंकड़ों के आधार पर लगाया है। इससे पहले २००४-०५ में गरीबों की संख्या ३७.२ फीसद थी।

योजना आयोग के मुताबिक २०११-१२ में गांवों में कुल आबादी का २५.७ फीसद गरीब थे तो शहरी आबादी में १३.७ फीसद गरीब थे। आयोग मानता है कि अब हर साल दो फीसद से ज्यादा की दर से गरीबी कम हो रही है। नए आंकड़ों में गरीबी घटने की दर २००४-०५ से २००११-१२ के सात वर्षों में तीन गुना हो गई है। गरीबों के आंकड़े का एक अनुमान सरकार ने २००९-१० में भी लगाया था। तब देश में करीब ३० फीसद गरीब थे। इन आंकड़ों का एलान सरकार ने मार्च २०१२ में किया था।

14 करोड़ खर्च...

और इस खर्च में किराया भी शामिल है। बिस्कुट का वितरण आंगनवाड़ी केंद्रों द्वारा किया जाएगा। छह महीने से तीन वर्ष की आयु वाले बच्चों के अलावा मां और गर्भवती महिलाओं को भी आयुर्वेदिक बिस्कुट दिया जाएगा।

जौ के स्वास्थ्यप्रद ठोस व

अ सकता है

(३) भुने जौ एवं चने के आटा का मिश्रण :-

इस प्रकार के आटा का मिश्रण समाज के प्रत्येक व्यक्तियों में प्रचलित है और लोग बड़े चाव से खाते है । इस प्रकार का मिश्रण जौ के आटे का तीन भाग व चने के आटे का एक भाग लेकर तैयार करते है । इस मिश्रण में कुछ लोग सीधे चीनी, शक्कर, गुड मिलाकर खाते है अथवा स्वादानुसार नमक, नीबू, जीरा, काला नमक, चाट मसाला और प्याज, अदरख, लहसुन के पेस्ट मिलाकर खाते है। इस मिश्रण के भरे बाटी अब पूर्वी उत्तर प्रदेश में काफी चाव से खाया जाता है। कुछ लोग वती को तल भी लेते है जिसका उपयोग यात्रा के दौरान किया जा सकता है।

जौ के ब्रेड :-

इसे बनाने की व्यवसायिक विधि निम्नवत है

जौ का आटा	-	५ .०० किग्रा ०
स्वच्छ जल	-	२ .८ लीटर
नमक	-	१०० ग्राम
क्म्प्रेस्ट यीस्ट	-	० .८० ग्राम
घी (शुद्द)	-	१०० ग्राम
माल्टेड फ्लोर	-	० .०२५ ग्राम
एस्सकार्बिक एसिड	-	० . ५० मिलीग्राम किग्रा ०
पोटेशियम ब्रोमाइड	-	० . ७१ मिलीग्राम किग्रा ०
अमोनियम क्लोराइड	-	३० मिलीग्राम

इस मिश्रण के किण्वन के लिए तीन घण्टे का समय चाहिए होता है। एस्कार्बिक एसिड उसी स्थिति में मिलते है यदि ब्रेड तुरन्त बनाना जरुरी होता है।

५) जौ के सुपाच्य पेय पदार्थ बनाने के लिए सर्व प्रथम नींबू का रस निकाल लेते है उसे छानकर बिज को अलग कर लेते है। इस रस में भूने जौ के आटे की थोड़ी मात्रा इस प्रकार मिलाते है कि एक पेय रूप में बन जाय कभी -कभी इस मिश्रण को हल्का सा गर्म करके, स्थिर एव ठंडा कर छान लेते है और मनचाहे कांच के बर्तन में रख तेले है। बाद में जब चाहे तब प्रयोग किया जा सकता है

(६) नींबू वर्गीय फलो के रस से तैयार जौ का पेय पदार्थ :-

नींबू वर्गीय फलो जैसे अंगूर, संतरा, सेब, लाइस, मौसमी रसदार नींबू का सर्व प्रथम रस निकाल लेते है । उसे छानकर बिज अलग कर लेते है। इसमे भूने हुए जौ के आटे को मिलाकर पतला पेय पदार्थ वना लेते है कभी -कभी इस मिश्रण को हल्का सा गर्म करके स्थिर कर लेते है बाद में ठण्डा करके छान लेते है और मन चाहे ग्लास के वर्तन में रखलेते है। बाद में जब चाहे दो चार घ घन्टो में उपभोग कर सकते है

कभी -कभी जौ की आटे की जगह वार्ली वाटर (जौ से प्राप्त रस) को मिला लेते है और प्रीजवेर्टिव के माध्यम से लम्बे समय तक उपयोग योग्य बनाया जा सकता है । वृहद स्तर पर बनाने का तरीका निम्नवत है -

नींबू वर्गीय फलो का रस - १ किग्रा ०
चीनी -------- २.५ किग्रा ०
साइटिक एसिड ----- ४० ग्राम
नींबू वर्गीय फलो का एसेन्स (सत्व)- -------- ०२ ग्राम
जौ पानी (बीर्ली वाटर)--------- १ .२५० किग्रा ०
मेटा वाइ (प्रीजवेर्टिव) सफ्लाइड ० .१ प्रतिशत ---- मात्रनुसार

(उपरोक्त मात्रा का उपयोग जलवायु मौसम में फलो के उपलब्धता के आधार पर घटाया बढाया जा सकता है /)

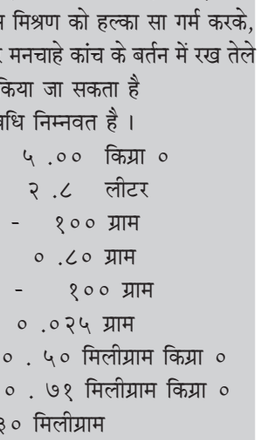

डा. सिया राम विश्वकर्मा,
कु.मधु,डा.बी.एन सिंह एवम
डा. एस॰ पी शिंह
अनुवांशिक एवं पादकप्रजनन विभाग
नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद - २२४२२९ (उत्तर प्रदेश)

अई अज भी जाओ को पवित्र, धार्मिक पर्यावरणीय मित्र के रूप मैं मन जाता हैयही कारन है कि प्रतेक धर्म कृत्य मै इसके प्रयोग से देवता भी प्रसन्न हो जाते है। वास्तव मैं अध्यात्मिक व वैज्ञानिक अधर पर इसमें कुछ न कुछ ऐसा तत्व विघमान है जो हमें सुख शान्तीव विवेक प्रदान करते है आहार पवित्र होने से अन्न :कारन प्रसन्न रहता है। कहा भी गया है जैसा खये अन्न वैसा वने मन यानि अन्नमय कोष से ही सूक्ष्म शारीर यानि मन वाणी व विचार का शोधन होता है कहने का तात्पर्य रोज कि दिन चर्या मै मनुष्य को एसे भोजन का चुनाव करना चाहिए जो स्वास्त्याकर हो, कृतु के अनुसार हो ताकि उससे जो शक्ति मिले, उर्जा मिले उससे व्यक्ति को प्रसन्नता व शान्ती मिले । आज के भाग दौड़ कि जिंदगी व बदलती जीवन शैली मै फ़ास्ट फ़ूड (जनक फूड)नए नए रोगों को न्योता दे रही है। शोध कर्ताओं कि मने तो सेहत का राज खाने के सुधरे देशी तरीको मै चिप हुआ है। सैम- सामइक फलें का नियमित सेवन, हरी सब्जियां व मिश्रित अनाजों का मै समावेश न केवल पाचन को दुरुस्त रखता है, बल्कि हम सभी को निरोग भी बनता है। वास्तव मै ज़ो मै निहित कार्बोहाइडेट व प्रोटीन के आलावा इसमे बीटा ग्लुकन (कोलेस्टालको समायोजन करने वाला तत्त्व)अशिटिल कोलाइन (नर्वस शिस्टोम को एक्टिवेट करने वाला तत्त्व जिससे याददास्त व पैरालासीस बीमारी नियंत्रित हो सकती है) घुलानासील घुलनशील अनाज के सुपाच्य रेशे विटामिन्स व ग्लूटेन की न्यूज उपस्थित (जो सुपाच्यता व शीलता देता है) के कारन जौ के अछे बालाहार, बार्लीसीरप, हार्लिक्स माल्टोवा व मनमोहक टाफीयॉ बनाये जा रहे है जो वुद्रिवर्धक व शान्ति प्रदान करने वाले होते है आज जौ के अच्छे किस्म के वीयर व माल्ट विदेशों में करोडो लोगो के प्यास बुझाते है । घरेलू स्तर पर जौ के कुछ प्रचारित खाद्य व पेय पदार्थ बनाये जा सकते है जिसका विवरण निम्नवत है प्रयोग होनेवाले पदार्थ व उसकी मात्रा विवेकानुसार घटाया बढाया जा सकता है। आधुनिक वैज्ञानिक तरीको का भी समावेश किया जा सकता है।

एकलरूप में जौ या उसके आटे से बने व्यंजन

(१) पर्ल बारले सुडौल जौ के दानेको पर्ल बारले की संज्ञ दी जाती है

यह जौ एक विशेष किस्म के रूप में चिन्हित होता है । एस प्रकार का अनाज बहुत ही बढ़िया वैज्ञानिक खेती करके प्राप्त किया जा सकता है। पर्ल बारले के अनाज के दाने बड़े सुडौल, रोगरोधी, छिलका निकल हुआ चमकदार होता है एस प्रकार के दाने का उपयोग उवालकर जूस के रूप में नित्य प्रति के सुबह श्याम के नाश्ते के रूप में बचो या हार उम्र के वक्ती को दिया जा सकता है और शेष बचा उबला दाना फाई करके स्वादानुसार नमक व काली मिर्च मिलाकर खाया जा सकता है। इसका पेय बहुत ही सुपाच्य होता है।

(२) (जौ- गेहूँ- चना मिश्रण का आटा:-

इस प्रकार के मिश्रण का उपयोग औषधि के रूप में उन लोंगो के लिए किया जाता है जो मधुमेह और पेट के रोग से ग्रसित होते है। इस मिश्रण को बनाने के लिए जौ का आटा ५० प्रतिशत गेहूँ एव चने का आटा २५ -२५ प्रतिशत लिया जाता है। इस मिश्रित आटे का प्रयोग प्रतिदिन भोजन में लिया जा सकता है जिससे कोलेस्टेराल जमाव को दूर करने का साथ -साथ भोजन अपच की समस्याओं से भी निजत पाया जा

नदियों से छीना उन्हाका घर

उत्तराखंड की तबाही के बाद नदियां अब मैदानी इलाकों में कहर बरपा रही है। तराई के कई जिलों में घाघरा गांव के गांव काटते हुए कस्बों और शहर की ओर बढ़ रही है। नदियों का यह रूप सदियों से देखा जाता रहा है पर इतने बड़े पैमाने पर प्रकोप पिछले कुछ दशकों से होने लगा है क्योंकि नदियां अपने हाथ से छीनी गई जमीन वापस लेने लगी हैं। यह नदी की स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिसे न समझने की वजह से समस्या बढ़ रही है और जानमाल का नुकसान भी। नदियों पर मुख्यत: दो तरह का संकट दिखाई पड़ रहा है। पहला, नदियों की जमीन यानी खादर के इलाके पर अतिक्रमण और दूसरा नदियों का लगातार प्रदूषित होते जाना। केदारनाथ में मंदाकिनी हो या उत्तरकाशी में भागीरथी या फिर गढ़वाल के निचले हिस्से में अलकनंदा, सभी ने अपनी जमीन वापस लेने की कोशिश तभी की, जब लोग यह भूल गए थे कि जिस जमीन का वे अतिक्रमण कर रहे हैं, वह किसी और की हो सकती है। नदियों की जमीन, यानी खादर का इलाका नदी के बढ़ने का होता है और इस पर कब्जा करते वक्त किसी को ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं पड़ती। विकास की नई अवधारणा में सभी को रिवर व्यू अपार्टमेंट में घर चाहिए और होटल उद्योग को नदी तट पर सैलानियों के लिए रिजॉर्ट। लेकिन नदियों की धारा लगातार बदलती है और कई बार वे सौ साल पुराने रास्ते पर भी लौट आती है। बिहार में कोसी इसका उदाहरण है। यूपी की राजधानी लखनऊ में गोमती की बड़ी बाढ़ १८७१ में आई, फिर वैसी ही बाढ़ १९६० और १९७१ में आई। पूर्वांचल के देवरिया में बरहज के पास सरयू नदी हर सौ साल में पुरानी जमीन छोड़कर नई जमीन पर बहने लगती है। पर देवारा के किसान नदी की छोड़ी गई जमीन पर खेती करते हैं, कोई पक्का निर्माण नहीं। यह जमीन खेती के लिए बहुत उपजाऊ मानी जाती है। लेकिन शहरी इलाकों में खादर की जमीन का इस्तेमाल पक्के निर्माण के लिए किया जा रहा है।

सागर भी बेहाल

उत्तराखंड में तबाही के बाद मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा ने नदियों के कि पर रोक लगाने का फैसला किया, जबकि इससे पहले कांग्रेस और बीजेप सरकारों ने उत्तराखंड में हर तरफ बेतरतीब निर्माण की इजाजत दी थी। क्यों, हिमाचल प्रदेश के शिमला में अब हर नई इमारत छह मंजिला बन शिमला में हर भवन छह मंजिल का है तो दार्जिलिंग और सिक्किम के गं यही हाल है। पहाड़ के ढलान और नदी व समुद्र के तटों पर हो रहा निम बड़ी तबाही ला सकता है। तिरुअनंतपुरम के कोवलम तट पर ढाई दशव कोई बसावट नहीं थी, पर अब तट से आठ-दस मीटर पर पक्के होटल बन चुके है, जो समुद्र तट कानून का सीधा उल्लंघन है। तमिलनाडु के से लेकर कन्याकुमारी तक यही हो रहा है। भूवैज्ञानिक वीके जोशी के मुता निर्माण बिल्डर लॉबी के दबाव में भूमि की भार सहने की क्षमता (ल कैपसिटी) का आकलन किए बिना हो रहे हैं, जो बड़े समुद्री तूफान या पर खतरनाक साबित हो सकता है।

ठीक यही स्थिति मैदानी इलाकों में नदियों के किनारे और पहाड़ी ढलान पर की भी है। दिल्ली में सौ साल पहले यमुना दरियागंज से सटकर बहती थी ले जा चुकी है। वाराणसी जिन दो नदियों वरुणा और असी से मिलकर बना था, उ असी विलुप्त हो चुकी है और उस पर मोह है। हाल में दायर एक जनहित याचिका के जा रहा है। मैदानी इलाकों से निकली ज्यादा पानी लेकर नहीं चलतीं, पर हिमा से आने वाली नदियों का पानी कई बा देता है। खासकर नेपाल की तरफ से नदियां बड़ा मैदान न मिलने की वजह स करती हैं और वेग से बहती है । बरसात स्वरूप सबसे विकराल होता है। फिर ये अ इलाके वापस लेती है और इस पर हुए अ ध्वस्त कर देती हैं। यूपी-बिहार में कई ज भारी तबाही होती है। केदारनाथ में हादसा पीछे हटने की वजह से बनी झील टू भूवैज्ञानिकों के मुताबिक ग्लेशियर जब पी रोड रोलर की तरह बड़ी चट्टानों को पीसत है। यह सारा मलबा पानी के तेज प्र मंदाकिनी की एक धारा का हिस्सा बन ग जमीन पर बड़े पैमाने पर निर्माण न हुआ ह भी इतना विकराल न होता।

जहर घोलने की कलाकारी

बरसात में हिमालय की ये नदियां शोक बन जाती हैं, तो दूसरी तरफ कुछ ऐसी नदियां भी है जिन्हें इसी बरसात में जीवन मिल जाता है। इन छोटी बरसाती नदियों का पानी तरह-तरह के कचरे से इतना जहरीला हो चुका है कि इसे पीकर जानवर भी दम तोड़ देते हैं। बीते अप्रैल में मनकापुर (गोंडा) से आगे सादुल्लानगर वन प्रभाग में विसुही और मनोरमा नदियों का पानी पीने से दो हिरनों की मौत हो गई। तराई की छोटी नदियां चीनी मिलों और उद्योगों के जहरीले कचरे का नाला बन गई हैं। गोरखपुर की आमी नदी कभी अमृत जैसा पानी लोगों को देती थी, लेकिन अभी इसका पानी जहरीला हो चुका है और यह पूर्वांचल में अभिशाप बन चुकी है। गुजरात में औद्योगिक शहर वापी का कचरा ढोने वाली दमन गंगा इतनी जहरीली हो चुकी है कि इसमें मछली जिंदा नहीं रह सकती। यह नदी जब समुद्र में मिलती है तो समुद्र के जीव-जंतु भी दम तोड़ देते हैं। यह समझने में हमें शायद अभी और देर लगे कि अतिक्रमण और प्रदूषण के जरिये धीरे-धीरे नदियों की जान लेकर अंतत: हम अपने अस्तित्व

मिड-डे मील बना बिच्छु की कब्रगाह

ओडिशा। ढेंकानाल जिले के सियारिया तैलासाही स्थित एक प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को परोसे गए मिड डे मील में मरा बिच्छू मिला। इसे खाने के बाद ३९ विद्यार्थियों की तबीयत खराब हो गई। मिड डे मील में आलू-सोया करी परोसी

फर्निचर से घर सजाए, पर जंगलों को न भूले

साथ जैव विविधता की क्षति, राजस्व हानि, कार्बन उत्सर्जन में बढ़ोतरी और प्राकृतिक आपदाओं के रूप में सामने आ रहा है। एशियाई देशों में तेजी से पनप रहे टिंबर उद्योग का ही परिणाम है कि यहां प्राकृतिक आपदाओं में भारी इजाफा हुआ है। अकेले २०१२ में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में इन आपदाओं से १० अरब डॉलर का नुकसान हुआ है। विश्व स्तर पर टिंबर का गैर-कानूनी कारोबार ३० से १०० अरब डॉलर के बीच है। यह कुल टिंबर कारोबार का १५ से ३० फीसदी है। इंटरपोल के अनुसार जलवायु परिवर्तन में सबसे बड़ी भूमिका निर्वनीकरण की है। चीन में टिंबर के अवैध कारोबार को रोकने वाले नेटवर्क की अनुपस्थिति इसे बढ़ावा दे रही है। भारी मुनाफे के चलते चीन इसे रोकने में कोई रुचि भी नहीं दिखा रहा है। दुनिया भर में टिंबर से लदे जितने जहाज चलते हैं उनमें से आधे का गंतव्य चीन होता है। एशिया-प्रशांत व अफ्रीका के लकड़ी निर्यात का अधिकांश हिस्सा चीन पहुंच रहा है। हजारों निगम, सरकारी एजेंसियां और मध्यस्थ आक्रामक ढंग से लकड़ी के कारोबार में लगे हैं। ये लोग वन संसाधनों से भरपूर इलाकों जैसे अमेजन और कॉन्गो बेसिन तथा एशिया-प्रशांत क्षेत्र में रेल, सड़क और बंदरगाहों का विकास कर रहे हैं ताकि टिंबर की गैरकानूनी कटाई आसानी से की जा सके।

चीन के कुल लकड़ी आयात का एक-तिहाई हिस्सा फर्नीचर और प्लाइवुड आदि के रूप में निर्यात कर दिया जाता है। यूरोपीय देश, अमेरिका और जापान ऐसे चीनी उत्पादों के बड़े ग्राहक हैं। लेकिन आयातकों को इस बात का पता नहीं होता कि वे चीन से ये चीजें आयात करके हरी-भरी धरती को रेगिस्तान में तब्दील करने के अघोषित अभियान का हिस्सा बन रहे हैं। पर्यावरण से जुड़े संगठन अब चीन की करतूत को उजागर करने लगे हैं इसलिए यूरोपीय संघ, अमेरिका और जापान के लिए चीन से आने वाले लकड़ी के सामानों पर नजर रखना जरूरी हो गया है। आयातकों द्वारा चीन पर फर्नीचर का स्रोत बताने का दबाव बढ़ता जा रहा है लेकिन टिंबर के गैरकानूनी कारोबार पर रोक लगाने की कोई योजना अभी तक चीन सरकार ने घोषित नहीं की है।

ठीना
घर

भी बेहाल

वजय बहुगुणा ने नदियों के किनारे निर्माण
इससे पहले कांग्रेस और बीजेपी, दोनों की
निर्माण की इजाजत दी थी। उत्तराखंड ही
नई इमारत छह मंजिला बन रही है। छोटा
दार्जिलिंग और सिक्किम के गंगटोक में भी
समुद्र के तटों पर हो रहा निर्माण कभी भी
के कोवलम तट पर ढाई दशक पहले तक
उ-दस मीटर पर पक्के होटल और रिजॉर्ट
उल्लंघन है। तमिलनाडु के महाबलीपुरम
वैज्ञानिक वीके जोशी के मुताबिक ये सभी
की भार सहने की क्षमता (लैंड बियरिंग
हैं, जो बड़े समुद्री तूफान या सूनामी आने

के किनारे और पहाड़ी ढलान पर हो रहे निर्माण
रियागंज से सटकर बहती थी लेकिन अब दूर
और असी से मिलकर बना था, उसमें एक नदी
लुप्त हो चुकी है और उस पर मोहल्ला बस चुका
में दायर एक जनहित याचिका के बाद इसे ढूंढा
है। मैदानी इलाकों से निकली नदियां बहुत
नी लेकर नहीं चलतीं, पर हिमालय की तरफ
वाली नदियों का पानी कई बार तबाही मचा
खासकर नेपाल की तरफ से उतरने वाली
ड़ा मैदान न मिलने की वजह से तेज कटान
और वेग से बहती है । बरसात में इन्हीं का
बसे विकराल होता है। फिर ये अपने खादर के
पस लेती है और इस पर हुए अतिक्रमण को
देती हैं। यूपी-बिहार में कई जगहों पर इससे
ही होती है। केदारनाथ में हादसा ग्लेशियर के
ने की वजह से बनी झील टूटने से हुआ।
कों के मुताबिक ग्लेशियर जब पीछे हटता है तो
की तरह बड़ी चट्टानों को पीसता हुआ चलता
सारा मलबा पानी के तेज प्रवाह के साथ
की एक धारा का हिस्सा बन गया। नदी की
बड़े पैमाने पर निर्माण न हुआ होता तो हादसा
विकराल न होता।

बना
ग्गाह

बिच्छू मिला। इसे
९ विद्यार्थियों की
हो गई। मिड डे
सोया करी परोसी

गई थी, जिसमें मरा बिच्छू निकला। ढेंकानाल के ब्लॉक एक्सटेंशन ऑफिसर धनंजय महापात्र ने बताया कि मिड डे मील खाने के बाद बच्चे उल्टी करने लगे। इसके बाद सभी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया, ३६ बच्चों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई। तीन का उपचार चल रहा है।

पशुपालन

राष्ट्रीय पर पशूपालन के बढावा देने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में पशू सेवा केंद्र की स्थापना विक्रय केंद्र रूप में की जाएगी प्रशक्षित वेटनरी सहायक ,पशुधन सहायक, पशुचिकित्सा सहायक, पैरावट, प्रशिक्षित गोपाल, पशु स्वास्थय कार्यकर्ता, पशु पालन कार्यकर्ता, पशु मित्र, AHW या स्थानीय १० उत्तीर्ण युवा को ग्राम पंचायत स्तर पर 'पशू सेवा केंद्र' का संचालन सोपा जायेगा जिसके द्वारा वे पशूपालको को न्यूनतम मूल्य पर निगम के उत्पादों का विक्रय करेंगे तथा पशुओ के स्वास्थ्य रखरखाव की देखरेख करेंगे इन्ही केन्द्रों के जरिये 'पशूधन सहायको एवं पशु चिकित्सकों' के माध्यम से पशू चिकित्सा सेवाये दी जायेगी।

पशु सेवा केंद्र

ग्रामीण क्षत्रों में पशुपालन करने वाले व्यक्ति की पशुपालन के जरिये आर्थिक उन्नति किये जाने के लिए स्थापित किये जाने बहुद्देश्य केंद्र है!

यह केंद्र ग्राम पंचायत स्तर पर स्थापित किये जाने है!

इन केन्द्रों को संचालित करने के लिए निम्न योग्यताएँ आवश्यक है!

योग्यता

प्रशक्षित वेटनरी सहायक ,पशुधन सहायक, पशुचिकित्सा सहायक, पैरावट, प्रशिक्षित गोपाल, पशु स्वास्थय कार्यकर्ता, पशु पालन कार्यकर्ता, पशु मित्र, AHW या स्थानीय १० उत्तीर्ण युवा !

अन्य योग्यता

ग्राम पंचायत क्षेत्र में 10x20 फिट तक का कमरा या दुकान उपलब्ध हो जिसके जरिये पशु सेवा केद्र का संचालन कर सके!

आवेदन का तरीका

निगम के पशु सेवा केंद्र के लिए पूर्ण विवरण तथा आवेदन पत्र में उल्लेखित शर्तों के अनुसार आवेदन करें!

अपूर्ण आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जायेगा!

पशु सेवा केंद्र में निवेश

निगम द्वारा चयन किये जाने के लिए नियमानुसार २५,०००/- रुपये उत्पाद हेतु निवेश राशी देय होगी, तथा निगम के निमानुसार आप केंद्र का संचालन करेगे!

टिकाऊ विकास

पर्यावरण संतुलन के साथ ही संभव

मैगसेसे अवॉर्ड विजेता और सुपरिचित पर्यावरणविद चंडी प्रसाद भट्ट चिपको आंदोलन के अगुआ माने जाते हैं। इनकी मान्यता है कि पर्यावरण संतुलन के साथ ही टिकाऊ विकास हो सकता है

चंडी प्रसाद भट्ट ने कहा

वास्तव में, उत्तराखंड में जो घटना हुई है वह सिर्फ एक आपदा नहीं है। सच बात तो यह है कि परंपरागत रूप से उत्तराखंड ऐसा क्षेत्र है जहां बाढ़ आने की संभावनाएं बनी रहती हैं और यहां भू-स्खलन प्राय: होता रहता है। लेकिन इस समय जो आपदा आई है और विनाशकारी घटना घटी है उसके पीछे सबसे बड़ा कारण सरासर व्यवस्थागत लापरवाही है। गंभीर बात यह है कि भगीरथी और अलकनंदा ऐसी नदियां हैं जहां समय समय पर बाढ़ आती ही रहती है। हमने कई बार अनेक अधिकारियों और प्राधिकरणों को इस क्षेत्र में होने वाले नुकसान और इससे होने वाली समस्याओं से आगाह किया है।

विकास के नाम पर देवदार के पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और यहां के पहाड़ों को तोड़ने की वजह से भू-स्खलन की घटनाएं बढ़ रही हैं। स्थानीय अखबारों ने भी इस खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया है और हमने भी प्राधिकरणों को चेताया लेकिन इस पर ध्यान ही नहीं दिया गया। मेरे विचार में सही तरीके से पत्थरों की दीवारें बनाई जाएं और उन्हें चौड़ी सड़क के किनारे खड़ा किया जाए। यही सही तरीका है। अब हमें इस तरह के विकास को अवश्य सुनिश्चित करना होगा। तभी इससे आगे होने वाले नुकसानों को रोका जा सकेगा। भविष्य में कोई नुकसान न हो इसके लिए पहाड़ों की सुरक्षा के लिए जल्द ही कुछ विशेष उपाय किए जाने की जरूरत है और यह वैज्ञानिक ढंग से ही हो सकता है। हिमालय के इस क्षेत्र में रहने वालों और यहां भ्रमण करने वालों को सावधान करने के लिए हमें कोई वॉर्निंग सिस्टम विकसित करना होगा। कुछ सरकारी एजेंसियों को इसके लिए खुद आगे बढ़कर काम करना होगा। उदाहरण के लिए, जिओलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (जीएसआई), इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) और मौसम विभाग को आपस में मिलकर काम करना चाहिए। जीएसआई, असुरक्षित अथवा अतिसंवेदनशील पर्वतीय क्षेत्रों का आसानी से पता लगा सकता है जबकि इसरो, सैटलाइट मैपिंग के माध्यम से इसकी दरारों को चिह्नित कर सकता है और उस पर निगरानी रख सकता है। मौसम विभाग पहले से ही खराब मौसम की चेतावनी दे सकता है। एक बार इस वॉर्निंग सिस्टम को प्रभाव में लाने के बाद, उत्तराखंड में होने वाले ऐसे नुकसानों को निश्चित रूप से रोका जा सकेगा। हालांकि योजनाएं बन चुकी हैं लेकिन दुर्भाग्यवश इन्हें अमल में फिलहाल नहीं लाया जा रहा है। हम वहां वृक्षारोपण के लिए लोगों को प्रोत्साहित करते हैं। गढ़वाल यहां का ऐसा पारंपरिक इलाका है जहां के लोग जलवायु परिवर्तन की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, वहां गांव के चारों ओर ड्रेनेज सिस्टम विकसित किया गया ताकि नदी का बहाव गांव की ओर न आए। लेकिन, बाद में आधुनिक विकास के साथ साथ यहां शहरी इलाके भी बसने लगे और इन इलाकों में हमारी बनाई एडवाइजरी को नहीं माना गया। इस बार जब बाढ़ आई तो यह इलाका पूरी तरह जलमग्न हो गया। टिकाऊ विकास सिर्फ पर्यावरण संतुलन के साथ ही संभव है। मौजूदा हालात में अब हर किसी को यह समझना होगा कि पहाड़ियों के मनोरम दृश्य से सिर्फ लाभ लेना एकतरफा सोच हो सकती है। हेमवती नंदन बहुगुणा, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी सरीखे नेताओं को जब लेटर लिखकर इस विकट स्थिति के बारे में बताया गया तो उन्होंने उस ओर ध्यान भी दिया था। बाद में तो सिर्फ हवाई सर्वे कर औपचारिकताएं पूरी कर ली जाती रहीं। जमीनी स्तर पर कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता था। लेकिन अब भी जमीनी स्तर पर काम करने के लिए बहुत सारे काम बचे हुए हैं जिन्हें पूरा करने की जरूरत है। वर्तमान में पर्यावरण असंतुलन के बुरे नतीजों के बारे में जागरूकता फैलाने के बावजूद गढ़वाल विकास मंडल निगम ने नदियों के तटों पर अपने गेस्ट हाउस और टूरिस्टों के लिए कॉटेज बना लिए हैं। यह प्रलय के दिनों का पूर्वाभास करा रहा है। बावजूद इसके हम इसे रोक नहीं पा रहे हैं। इससे आने वाले समय में आपदाओं में और बढ़ोतरी होगी।

घर में लाये सकरात्मक ऊर्जा

घर में लाये सकरात्मक उर्जा लाने के लिए हम क्या-क्या नहीं करते। अपने रिश्तों को संभाले रखने और खुशहाल बनाने के लिए हम तमाम तरह के उपाय अपनाते हैं। आइए आपको बताते हैं किस-किस तरीके से आप घर में सकारात्मक ऊर्जा ला सकते हैं। चीनी संस्कृति में मैंडरिन बत्तख का जोड़ा नौजवान पति पत्नियों के बीच प्रेम का प्रतीक माना जाता है। इन्हें घर की दक्षिण पश्चिम दिशा के कोने में अथवा शयनकक्ष की दक्षिण पश्चिम दिशा के कोने में रखा जा सकता है, क्योंकि यह कोना पारस्परिक संबंधों का क्षेत्र है। यह आपके प्रेमपूर्ण जीवन को समृद्ध करता है।

यदि आप अकेले हैं और विवाह करने के इच्छुक हैं तो आप इन बत्तखों की पेंटिंग अपने शयनकक्ष में लटका सकते हैं अथवा एक जोड़ी बत्तख अपने शयनकक्ष में रख सकते हैं। पर, इस बात का ध्यान रखें कि आप केवल बत्तख का एक जोड़ा रखेंगे। न अकेली एक बत्तख रखेंगे और न ही तीन बत्तखें रखेंगे। अकेली रखने का परिणाम यह होगा कि आप अकेले ही रहेंगे। तीन रखने का परिणाम यह होगा कि आपके वैवाहिक जीवन में किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश हो सकता है। यह जोड़ा रखने से पहले ध्यान रखें कि एक बत्तख नर और दूसरी मादा हो।

क्रीम रंग के चीनी मिट्टी के फूलदान में पीले रंग के फूल रखिए:

आपसी संबंध बढ़ाने के लिए यह एक सरल उपाय है। अपने घर में दक्षिण-पश्चिम दिशा के कोने में क्रीम कलर की चीनी मिटटी के फूलदान में पीले रंग के कृत्रिम फूल रखें। यह क्षेत्र स्नेहपूर्ण संबंधों का क्षेत्र है।

लाफिंग बुद्धा की मूर्ति:

लाफिंग बुद्धा की मूर्ति धन-दौलत के लिए मानी जाती है। इससे घर में संपन्नता सफलता और आर्थिक समृद्धि आती है। लाफिंग बुद्धा की मूर्ति, जहां रखी जाती है वह स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे लगभाग ३० इंच की ऊंचाई पर मुख्य द्वार के सामने प्रस्थापित करना चाहिए। लाफिंग बुद्धा की मूर्ति मुख्य द्वार से घर में प्रवेश करने वाली ऊर्जा का अभिनंदन करती है। यह ऊर्जा क्रियाशील होकर अत्यधिक समृद्धि प्रदान करती है। यदि किसी कारणवश इस स्थान पर यह मूर्ति रखना संभव न हो, तो इसे बगल वाली टेबल अथवा कोने की टेबल पर रखा जा सकता है, ताकि तिरछी ही सही वह मुख्य द्वार के सामने हो और उसका चेहरा मुख्य द्वार की ओर हो। लाफिंग बुद्धा की मूर्ति शयन कक्ष अथवा भोजन कक्ष में नहीं रखनी चाहिए। सम्पत्ति के इस देवता की पूजा या अराधना नहीं की जाती, बल्कि इसे सजा कर रखा जाता है, क्योंकि इसकी उपस्थिति शुद्ध रूप से प्रतीकात्मक और शुभ मानी जाती है।

प्रेम के लिए क्रिस्टल बॉल्स:

आपके घर की दक्षिण-पश्चिम दिशा का कोना प्रेम, और स्नेह से जुड़ा होता है । इस क्षेत्र का तत्व पृथ्वी है। इस क्षेत्र की शक्ति बढ़ाने का बेहतर उपाय असली क्रिस्टल की दो बॉल्स का इस्तेमाल करना बेहतर है। असली क्रिस्टल के कारण आपके शयनकक्ष की दक्षिण-पश्चिम दिशा का कोना सक्रिय हो जाता है और आपके प्रिय व्यक्तियों के साथ आपके संबंधों में सामंजस्य स्थापित कर घर में सुख शान्ति लाता है। क्रिस्टल के गोलों को शोधित करना जरूरी है। उनसे जुड़ी हुई किसी तरह की नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने के लिए उन्हें कम से कम एक हफ्ते तक नमक के पानी में रखना चाहिए। असली स्फटिक विशेष रूप से बहुत प्रभावशाली होते हैं।

मुंबई एग्रीकल्चरल प्रोडक्ट मार्केट कमोडिटी

दिनांक २६/७/२०१३

सामान	ईकाइ	आगमन क्वींटल	न्यूनतम	अधिकतम	सामान्य
आलू	क्वींटल	१६२४०	७५०	११००	९२५
कांदा	क्वींटल	८५००	२२००	२६००	२४००
लसून	क्वींटल किलो	४००	१८००	३४००	२६००
भाजी					
भउमुग सेंगा	10 किलो	०	३४०	४००	३७०
नींबू	100 नग	६००	४०	१६०	१००
अदरक	10 किलो	७००	६५०	११००	८७५
अरवी	10 किलो	०	१८०	२२०	२००
बीट	10 किलो	०	१२०	१६०	१४०
भिंडी	10 किलो	८४०	२००	४२०	३१०
भोपला	10 किलो	५८०	३०	१००	६५
भोपला-दूधी	10 किलो	२००	२००	३००	२५०
चवली (सेंगा)	10 किलो	०	२२०	३००	२६०
धेमसे	10 किलो	०	१००	२००	१५०
फरसबी	10 किलो	०	३००	४००	३५०
फूलगोभी	10 किलो	४८०	१००	१८०	१४०
गाजर	10 किलो	८५०	१२०	१४०	१३०
गवार	10 किलो	०	४००	५००	४५०
घेवडा	10 किलो	०	२००	३२०	२६०
ककड़ी	10 किलो	५६०	४०	१००	७०
करेला	10 किलो	४५०	३००	४००	३५०
केली(भाजी)	10 किलो	०	१२०	१६०	१४०
गोभी	10किलो	१२२०	१००	१४०	१२०
मिर्ची (धोबाली)	10 किलो	०	८०	१००	९०
पडवल	10 किलो	४८०	३००	३६०	३३०
रतालु	10 किलो	१६०	२२०	२६०	२४०
सेवेंगा सेंग	10 किलो	०	१००	२४०	१७०
शिराली ढोका	10 किलो	३००	४००	५००	४५०
सुरजन	10किलो	३६०	२८०	३४०	३१०
टमाटर	10 किलो	८००	१२०	१६०	१४०
टंडाली	10किलो	२७८०	२००	३२०	२६०
वटाना	10 किलो	२४०	१६०	४००	२८०
वालवाड	10 किलो	३१००	२००	३४०	२७०
वांगी	10 किलो	०	३००	३४०	३२०
मिर्ची (जलवा)	10 किलो	४००	१४०	३००	२२०
कडीपत्ता	10 किलो	२५८०	१६०	४००	२८०
कांदाप्त	10 किलो	२४०	१२०	१८०	१५०
कोचमीर	100 ज़ुडी	२८०	५००	८००	६५०
मेथी	100 जुडी	१४००	६००	१०००	८००
मुली	100 जुडी	१३२०	४००	१०००	७००
पालक	100 बंडल	०	२०	२५	२३
पुदिना	100 जुडी	३२०	४००	५००	४५०
शेपू	100 जुडी	५००	१००	३००	२००
	100 जुडी	३६०	४००	१२००	८००
फल					
आम १	क्वींटल	०	०	०	०
आम २ (मिक्स)	क्वींटल	२१२०	१०००	२८००	१९००
अनानस	क्वींटल	१९८०	८००	१८००	१३००
चीकू	क्वींटल	१८४	७००	१५००	११००
डालिम	क्वींटल	९३१	३०००	६०००	४५००
कलिंगढ	क्वींटल	४६४०	५००	८००	६५०
मोसंबी	क्वींटल	२८२०	८००	२८००	१८००
पपया	क्वींटल	१३४७	८००	२०००	१४००
पेरु	क्वींटल	१६	१०००	२०००	१५००
सफरचंद	क्वींटल	२८२५	५००	९०००	४७५०
संतरा	क्वींटल	२५९	१०००	४०००	२५००
तरबुज	क्वींटल	१०३४	१०००	१६००	१३००
मका	क्वींटल	४९२	६००	१०००	८००
केला	क्वींटल	०	०	०	०
एमआर २					
बाजरी	क्वींटल	०	१६००	२४००	२०००
गेहूं	क्वींटल	०	२१००	३०००	२५५०
गेहूं(लोकवन)	क्वींटल	०	२०००	२६००	२३००
जवारी	क्वींटल	०	१७००	३५००	२६००
चावल(बासमती)	क्वींटल	०	६०००	९०००	७५००
चावल(ए.एल.ओ)	क्वींटल	०	२४००	२५००	२४५०
चावल	क्वींटल	०	२३००	५५००	३९००
चावली(बी)	क्वींटल	०	४०००	५०००	४५००
अरहरदाल	क्वींटल	०	४२००	५५००	४८५०
कुल्थी	क्वींटल	०	२५००	४०००	३२५०
मसूर	क्वींटल	०	४७००	५६००	५१५०
मसूर दाल	क्वींटल	०	५०००	५४००	५२००
तुअर दाल	क्वींटल	०	६०००	७०००	६५००
उदीदाल	क्वींटल	०	५०००	६०००	५५००
मुंग	क्वींटल	०	५५००	७५००	६५००
मुंगदाल	क्वींटल	०	६५००	७५००	७०००
शेंगदाना	क्वींटल	०	८०००	८५००	८२५०
एमकेटी- १		७२३	१७००	२३००	२०००
एटीए	क्वींटल	७	६५००	८०००	७२५०
बडीशौप	क्वींटल	३५	९०००	१०००	९५००
तील	क्वींटल	२०२२	६५०	१३५०	१०००
नारियल	125-225 **नग**	११३	३०००	३८००	३४००
गुल	क्वींटल	१४९०	३०५२	३३२१	३१८७
शक्कर	क्वींटल	२	२००००	३५०००	२७५००
अंजीर	क्वींटल	४	४०००	६०००	५०००
चींच	क्वींटल	०	५०००	६०००	५५००
धाने	क्वींटल	५	९०००	१०००	९५००
हल्दी	क्वींटल	२२४	१४०००	१६०००	१५०००
जीरा	क्वींटल	४८२	५५००	७५००	६५००
लाल मिर्च	क्वींटल	३०	३५००	४५००	४०००
मोहरी	क्वींटल	१७८	४५०००	५५०००	५००००
काजू	क्वींटल	१२	५५०००	७५०००	६५०००
वेलची	क्वींटल	२२०	४०००	५००००	४५०००
बदाम	क्वींटल	०	६५०००	७५०००	७००००
चारोली	क्वींटल	२४०	४०००	५०००	४५००
खजूर	क्वींटल	०	६०००	७०००	६५००
खरीक	क्वींटल	६०	१००००	१६०००	१३०००
किसमिस	क्वींटल	२५	७००००	८००००	७५०००
लवंग	क्वींटल	३	६५०००	७००००	६७५००
पिस्ता	क्वींटल	३	३२५००	४२५००	३७५००
अखरोड	क्वींटल				
२५.०७.२०१३					
एम आर ३					
सुर्यफल तेल	क्वींटल	०	७४००	८०००	७७००
शेंगदाना तेल	क्वींटल	०	९७५०	९७५०	९७५०
पामोलिन तेल	क्वींटल	०	५२१०	५२१०	५२५०
सोयाबिन तेल	क्वींटल	०	६३१०	६३१०	६३१०
वनस्पति तेल	क्वींटल	०	६२००	७६००	६९००
राई तेल	क्वींटल	०	६४५०	६७५०	६६००

मुंबई एग्रीकल्चरल प्रोडक्ट मार्केट कमोडिटी

दिनांक ३०/७/२०१३

सामान	ईकाइ	आगमन क्वींटल	न्यूनतम	अधिकतम	एवरेज
आलू	क्वींटल	८५६०	१०००	१२००	९२५
कांदा	क्वींटल	६७५०	२३००	२६५०	२४७५
लसून	क्वींटल किलो	२००	१८००	३४००	२६००
भाजी					
भउमुग सेंगा	10 किलो	०	२८०	३२०	३००
नींबू	100 नग	५७०	४०	१४०	९०
अदरक	10 किलो	१४००	६००	११००	८५०
अरवी	10 किलो	०	१६०	२००	१८०
बीट	10 किलो	०	१००	१८०	१४०
भिंडी	10 किलो	६००	१६०	४२०	२९०
भोपला	10 किलो	७८०	८०	१००	९०
भोपला-दूधी	10 किलो	२४०	२२०	३००	२६०
चवली (सेंगा)	10 किलो	०	२४०	३००	२७०
धेमसे	10 किलो	०	१००	३००	२००
फरसबी	10 किलो	०	२८०	३२०	३००
फूलगोभी	10 किलो	८३०	१४०	२४०	१९०
गाजर	10 किलो	६५०	१२०	१६०	१४०
गवार	10 किलो	०	५००	५५०	५२५
घेवडा	10 किलो	०	३००	३६०	३३०
ककड़ी	10 किलो	६५०	४०	१२०	८०
करेला	10 किलो	२४०	३००	३८०	३४०
केली(भाजी)	10 किलो	०	१००	१६०	१३०
गोभी	10किलो	१६६०	१००	१६०	१३०
मिर्ची (धोबाली)	10 किलो	०	८०	१२०	१००
पडवल	10 किलो	४५०	४००	४५०	४२५
रतालु	10 किलो	१२०	३००	३४०	३२०
सेवेंगा सेंग	10 किलो	०	१००	१४०	१२०
शिराली ढोका	10 किलो	६००	३००	४००	३५०
सुरजन	10किलो	३२०	३००	३२०	३१०
टमाटर	10 किलो	७००	१२०	१८०	१५०
टंडाली	10किलो	२२८०	१००	३२०	२१०
वटाना	10 किलो	२१०	१२०	३४०	२३०
वालवाड	10 किलो	२५००	२६०	३२०	२९०
वांगी	10 किलो	०	२८०	४००	३४०
मिर्ची (जलवा)	10 किलो	४९०	२००	३६०	२८०
कडीपत्ता	10 किलो	२५९०	१२०	३६०	२४०
कांदाप्त	10 किलो	२८०	१२०	१८०	१५०
कोचमीर	100 ज़ुडी	२८०	७००	१०००	८५०
मेथी	100 जुडी	१०४०	५००	१२००	८५०
मुली	100 जुडी	१०००	६००	१०००	८००
पालक	100 बंडल	०	२०	२५	२३
पुदिना	100 जुडी	३६०	४००	६००	५००
शेपू	100 जुडी	७५०	१००	३००	२००
	100 जुडी	४००	४००	१०००	७००
फल					
आम १	क्वींटल	०	०	०	०
आम २ (मिक्स)	क्वींटल	११७०	१५००	२५००	१९००
अनानस	क्वींटल	१२६०	८००	२०००	१४००
चीकू	क्वींटल	३२१	७००	१५००	११००
डालिम	क्वींटल	१६६५	३०००	७०००	५०००
कलिंगढ	क्वींटल	९८६०	५००	९००	७००
मोसंबी	क्वींटल	१८३०	८००	२४००	१६००
पपया	क्वींटल	४५२०	१०००	२४००	१७००
पेरु	क्वींटल	३८	१०००	२०००	१५००
सफरचंद	क्वींटल	५१२७	१५००	९०००	५२५०
संतरा	क्वींटल	१९७	१०००	३०००	२०००
तरबुज	क्वींटल	२५००	१०००	१६००	१३००
मका	क्वींटल	३२९	६००	१०००	८००
केला	क्वींटल	९	३५००	५०००	४२५०
एमआर २					
बाजरी	क्वींटल	०	१६००	२४००	२०००
गेहूं	क्वींटल	०	२१००	३०००	२५५०
गेहूं(लोकवन)	क्वींटल	०	२०००	२६००	२३००
जवारी	क्वींटल	०	१७००	३५००	२६००
चावल(बासमती)	क्वींटल	०	६०००	९०००	७५००
चावल(ए.एल.ओ)	क्वींटल	०	२४००	२५००	२४५०
चावल	क्वींटल	०	२३००	५५००	३९००
चावली(बी)	क्वींटल	०	४०००	५०००	४५००
अरहरदाल	क्वींटल	०	४२००	५५००	४८५०
कुल्थी	क्वींटल	०	२५००	४०००	३२५०
मसूर	क्वींटल	०	४७००	५६००	५१५०
मसूर दाल	क्वींटल	०	५०००	५४००	५२००
तुअर दाल	क्वींटल	०	६०००	७०००	६५००
उदीदाल	क्वींटल	०	५०००	६०००	५५००
मुंग	क्वींटल	०	५५००	७५००	६५००
मुंगदाल	क्वींटल	०	६५००	७५००	७०००
शेंगदाना	क्वींटल	०	८०००	८५००	८२५०
एमकेटी- १		१३१६	१७००	२३००	२०००
एटीए	क्वींटल	७८	६५००	८०००	७२५०
बडीशौप	क्वींटल	५३	९०००	१०००	९५००
तील	क्वींटल	५७५०	६५०	१३५०	१०००
नारियल	125-225 **नग**	४२०	३०००	३८००	३४००
गुल	क्वींटल	३४१४	३०४०	३३११	३१७६
शक्कर	क्वींटल	५	२००००	३५०००	२७५००
अंजीर	क्वींटल	२१	४०००	६०००	५०००
चींच	क्वींटल	३२४	५०००	६०००	५५००
धाने	क्वींटल	०	९०००	१०००	९५००
हल्दी	क्वींटल	४८८	१४०००	१६०००	१५०००
जीरा	क्वींटल	४८४	५५००	७५००	६५००
लाल मिर्च	क्वींटल	३८	३५००	४५००	४०००
मोहरी	क्वींटल	७४१	४५०००	५५०००	५००००
काजू	क्वींटल	०	५५०००	७५०००	६५०००
वेलची	क्वींटल	४३	४०००	५००००	४५०००
बदाम	क्वींटल	०	६५०००	७५०००	७००००
चारोली	क्वींटल	२५७	४०००	५०००	४५००
खजूर	क्वींटल	५	६०००	७०००	६५००
खरीक	क्वींटल	७९	१००००	१६०००	१३०००
किसमिस	क्वींटल	१२	७००००	८००००	७५०००
लवंग	क्वींटल	९	६५०००	७००००	६७५००
पिस्ता	क्वींटल	४	३२५००	४२५००	३७५००
अखरोड	क्वींटल				
२९.०७.२०१३					
एम आर ३					
सुर्यफल तेल	क्वींटल	०	६३००	७९००	७१००
शेंगदाना तेल	क्वींटल	०	९६००	९६००	९६००
पामोलिन तेल	क्वींटल	०	५१४०	५१४०	५२५०
सोयाबिन तेल	क्वींटल	०	६२१०	६२१०	६२१०
वनस्पति तेल	क्वींटल	०	६३००	७८००	७०५०
राई तेल	क्वींटल	०	६४५०	६७५०	६६००

एक सपने की उड़ान

चैतन्य केमिकल

चैतन्य समूह का एक हिस्सा है चैतन्य केमिकल,जिसकी स्थापना १९४७में हुई इसकी निर्माणइकाई महाराष्ट्र राज्य के विधर्भ क्षेत्र में स्थित हैं यह कंपनी कृषि केमिकल ,जैविक कृषि सामग्री ,पशु खाद्य सामग्री को थोक निर्माताओं को देने के साथ साथ ,निर्यात भी करती हैं इस कंपनी को उसकी भूमिका के लिए कही पुरस्कार मिले।

डॉ.लिखितकर जो की कंपनी के जनरल मेनेजर है ने बताया की ...कंपनी के बारे में बाजार के मांग के अनुसार भविष्य की योजनाए

बनाई जाती है। डॉ लिखितकर ने सूक्ष्म जीव विज्ञानं में डॉक्टरेट करने के साथ साथ वनस्पति विज्ञानं ,सुष्म जिव विज्ञानं में पिछले १८ वर्ष में योगदान किया है। डॉ.लिखितकर का कहेना है चैतन्य केमिकल १९८७ में अस्तित्व में आई , यह मुख्य रूप से नुट्रासेटीकलस और सोडियम केसिनेट , कैल्शियम केसिनेट , सोया आइसोलेट तथा प्रोटीन हैड्रोलायसेट, स्वाद बढाने के लिए विशेष प्रकार के प्रोटीन तथा बेक्टरियो लॉजिकल ,मीडिया सामग्री, कॉस्मेटिक उत्पादों, कृषि उत्पादों का उत्पादन कराती हैं

डॉ.लिखितकर कंपनी के भविष्य के लिए विशिष्ट लक्ष्य बताते है ...कि हम बाजार विकसित करने के लिए ,गुणवत्ता उत्पादों समुदायों की सेवा करने के लिए घरेलु निर्यात में वृधि कि योजना बना रहे हैं १९९४ में कंपनी ने न्युट्रा सिटिकल,एमिनो एसिड चिलेट ,और अन्य उत्पादन क साथ विविधताओं में प्रवेश किया और हमने उसके बाद पीछे मुडकर नहीं देखा

प्रबंधन टीम में डॉ. ए.जी . देशपांडे और श्री एस .पी.बोरगॉवकर जो UDCT मुंबई के खाद्य प्रोद्योगिक के उद्योग में एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व है का सक्षम मार्ग दर्शन कंपनी को मिलता रहा हैं इस टीम में हाल ही में श्री प्रसन्न ए देशपांडे जो कि मोनश विश्वविद्यालय ऑस्ट्रेलिया से शैं है शामिल हुऐं यह कंपनी को सही मार्गदर्शन करते हुए कंपनी के विस्तार कि योजना बनाई है कि वर्त्तमान में यह दवाइयों से जलीय कृषि , सूक्ष्म जीव , मुर्गी पालन ,पशु चिकत्सा विज्ञानं ,कृषि उद्योगों के महत्व पूर्ण क्षेत्रो में योगदान दे रही है

-आरती परळकर

गिरता रूपया ,क्या करे आरबीआई

आज आई क्रेडिट पॉलिसी में आरबीआई ने रुपये पर फोकस किया, लेकिन उसका असर देखने को नहीं मिल सका है। आरबीआई गवर्नर डी सुब्बाराव का कहना है कि घरेलू और विदेशी आर्थिक हालात को देखते हुए पॉलिसी की घोषणा की है। वहीं डॉलर में मजबूती से विकासशील देशों की मुद्रा कमजोर हुई है। अगर मुद्रा बाजार में स्थिरता आती है तो हाल में उठाए गए कदमों को वापस लिया जा सकता है। रुपये की गिरावट को रोकना आरबीआई का लक्ष्य है। आरबीआई ने रुपये में गिरावट को थामने के लिए कड़ा रुख अपनाया है। आगे दरों में कटौती की गुंजाइश बनी हुई है। रुपये में जैसे ही स्थिरता आएगी, क्रेडिट पॉलिसी का रुख फिर ग्रोथ पर आएगा। आरबीआई के कदमों से रुपया कुछ संभल गया है और जरूरत पड़ने पर तुरंत कदम उठाया जाएगा। हालांकि करेंट अकाउंट घाटे को कम करने बेहद जरूरी है। आरबीआई के मुताबिक रुपये और बाजार का भविष्य अमेरिका के क्यूई३ पर निर्भर है। लेकिन बढ़े हुए करेंट अकाउंट घाटे से भारतीय इकोनॉमी के लिए जोखिम बढ़ा है। मसलन सरकारी नीतियों के जरिए ग्रोथ को बढ़ाने के कदम उठाने की जरूरत है। एसबीआई के एमडी दिवाकर गुप्ता का कहना है कि रुपये के उतार-चढ़ाव को रोकना एक चुनौती है। रुपये के लिए आरबीआई के कदम जरूरी हैं, लेकिन ऊंची दरें ग्रोथ के लिए अच्छी नहीं हैं। हालांकि रुपया बहुत ज्यादा मजबूत नहीं होगा। ऐसे में अर्थव्यवस्था पटरी पर लाने के लिए सरकार की बहुत बड़ी भूमिका होगी। लिहाजा देर लगेगी पर ग्रोथ वापस आएगी।

आरबीआई ने क्रेडिट पॉलिसी में रेपो रेट और सीआरआर में कोई बदलाव नहीं किया है। लिहाजा रेपो रेट ७.२५ फीसदी, रिवर्स रेपो रेट ६.२५ फीसदी और सीआरआर ४ फीसदी पर कायम है। आरबीआई ने वित्त वर्ष २०१४ के लिए क्रेडिट ग्रोथ का अनुमान बिना बदलाव के १५ फीसदी पर बरकरार रखा है। वित्त वर्ष २०१४ के लिए डिपॉजिट ग्रोथ भी बिना बदलाव के १४ फीसदी पर बरकरार रखा है। वित्त वर्ष २०१४ में एम३ ग्रोथ का अनुमान १३ फीसदी पर बरकरार रखा है। आरबीआई ने वित्त वर्ष २०१४ के लिए जीडीपी ग्रोथ का अनुमान ५.७ फीसदी से घटाकर ५.५ फीसदी कर दिया है। आरबीआई का मानना है कि महंगाई को लेकर परेशानियां बढ़ी हैं। आगे कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और रुपये के गिरावट से महंगाई बढ़ सकती है।

पाक्षिक राशी फल
अगस्त–2013
(1/8/2013 से 15/8/2013)

(पं.महेन्द्र दाधीच)

मेष :– पारिवारिक मामलो में खर्च होगा। शुभ कार्य होंगे दांपत्य जीवन में सुधार होगा। दैनिक व्यापार में सफलता मिलेगी। भाईयो का सहयोग मिलेगा और शत्रु प्रभावहीन होंगे।

वृष :– शत्रु प्रभावहीन होंगे। मित्र वर्ग का सहयोग मिलेगा लेखन कार्य से जुड़े प्रगति पायेगें। व्यापार–व्यवसाय में समय सुखद रहेगा नौकरी पेशा सहयोग पायेगें। आर्थिक मामलो में सफलता मिलेगी।

मिथुन :– उत्साह में वृद्धि होगी कार्य में प्रगति पायेगें। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु वर्ग प्रभावहीन होगें धन के मामलो में स्वप्रयत्नो से सुधारवादी रहेगा। सन्तान पक्ष का सहयोग मिलेगा।

कर्क :– पारिवारिक मामलो में खर्च होगा। व्यस्तता रहेगी, जमीन जायदाद के मामलो में सावधानी रखनी होगी नौकरी पेशा संभलकर चले.

सिंह :– अपने सामर्थ्यानुसार सफलता पायेगें। स्वास्थ्य की वृद्धि से समय ठीक रहेगा शत्रु पक्ष प्रभावहीन होगें मित्र वर्ग का सहयोग मिलेगा। नौकरी पेशा लाभान्वित होगें परिवार से सहयोग मिलेगा।

कन्या :– थोड़ी समझदारी से चले तो मास अनुकुल कहा जा सकता है नौकरी पेशा के लिये समय ठीक–ठाक रहेगा पारिवारिक मामलो में समय उत्तम रहेगा सोचे कार्य भी बनेगे।

तुला :– समय का सदुपयोग कर अपने कार्य में सफलत होगे। मित्रो, स्वजनो का सहयोग लाभकारी रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी दांपत्य जीवन में मधुर वातावरण बना रहेगा स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक :–दैनिक व्यवसाय में सावधानी रखनी होगी। स्त्री पक्ष के स्वास्थ्य में गड़बड़ी हो सकती है प्रभाव में वृद्धि होगी नौकरी पेशा संभलकर चले आर्थिक सावधानी रखें।

मकर :–स्वास्थ्य ठीक रहने से काम काज में मन लगेगा। स्त्री पक्ष का सहयोग लाभकारी रहेगा, पारिवारिक मामलो में समय सुखद रहेगा, नौकरी पेशा समय का लाभ पायेगें शत्रु वर्ग प्रभावहीन होंगे।

कुंभ :– भाग्योन्नति में थोड़े परिश्रम से प्रगति होगी। शत्रु पक्ष प्रभावहीन होंगे। धन लाभ के योग भी बनेंगे। व्यापार व्यवसाय में समय अनुकुल रहेगा नौकरी पेशा राहत पायेगें।

मीन :– मकान भूमि सम्बन्धित मामलो में अनुकुल स्थिति पायेंगे। मा़ृ पक्ष से चिंता दूर होगी, स्वास्थ्य ठीक रहेगा नौकरी पेशा व्यक्ति सुखद स्थिति पायेंगे, दाम्पत्य जीवन में मिलीजुली स्थिति रहेगी।

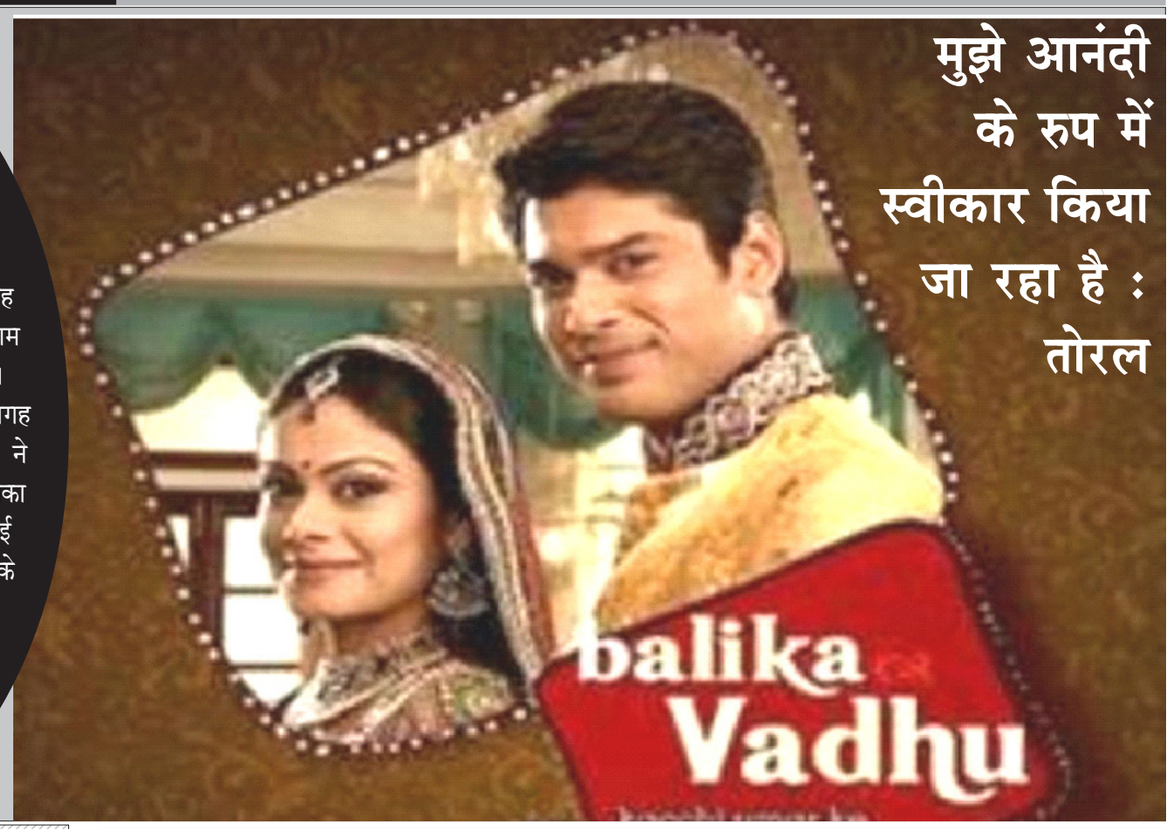

कलर्स टीवी के सबसे लोकप्रिय धारावाहिक बालिका वधु में आनंदी की भूमिका करने वाली प्रत्यूशा बनर्जी की जगह आईं तोरल रासपुत्र को खुशी है कि आखिर लोगों ने उसे आनंदी की जगह स्वीकार कर लिया,और लोगों ने उनके काम को सराहा जो एक सकारात्मक बात है। तोरल इस साल ४ मार्च को प्रत्यूशा की जगह आनंदी बनी थी जबकि २०१० में प्रत्यूशा ने आनंदी की भूमिका में बाल कलाकार अविका गौर की जगह बालिग आनंदी बनकर आई थी। ये धारावाहिक बाल विवाह और उसके खराब नतीजों के बारे में हैं। इंडो-एशियन न्यूज सर्विस। सामाजिक चेतना जागृत करने के साथ साथ यह धारावाहिक खूब लोकप्रिय भी है

मुझे आनंदी के रुप में स्वीकार किया जा रहा है : तोरल

संता, डंडा और मुर्गी का अंडा

संता ने एक Poultry Farm खरीदा, Farm का पुराना मालिक अपनी मुर्गियों के द्वारा कम अंडे दिए जाने की वजह से परेशान था

एक दिन संता ने सभी मुर्गियों को हुक्म दिया की कल से मुर्गियां ज्यादा अंडे दे..

संता : अगर तुम लोगों ने कल से २-२ अंडे नहीं दिए तो कल से तुम्हारा दाना पानी बंद

मुर्गिया डर गयी ह्न. सब ने २-२ अंडे दिए मगर एक ने सिर्फ एक अंडा ही दिया

संता: तुम ने १ अंडा ही दिया है ? तुम्हें मेरा डर नहीं ?

जवाब मिला : मालिक ! ये आपके डर की वजह से दिया है ह्न वरना मैं तो मुर्गा हूँ

संता का गांव और ६०० मुर्दे

संता सिंह के गांव में एक टू-सीटर हेलीकॉप्टर गिरा।

गांव के सारे सरदार राहत काम में जुट गए। और देखते ही देखते ६०० मरे लोगों को निकाल लाए..

पास खड़े कुछ विदेशी लोगों ने सोचा: साला समझ नहीं आया ऐसा कौन सा हेलीकॉप्टर था जिसमें ६०० लोग सवार थे, बाद में पता चला कि हेलीकॉप्टर कब्रिस्तान में गिरा था।

दुधी (लौकी) की खीर

लौकी की खीर बेहद स्वादिष्ट होती है। वैसे तो कई जगह इसे मावा मिला कर भी बनाया जाता है लेकिन मावे वाली लौकी की खीर में वो स्वाद नहीं आता जो बिना मावे वाली लौकी की खीर में आता है। तो आइये आज हम बिना मावे वाली लौकी की खीर बनाते हैं।

आवश्यक सामग्री:

- फुल क्रीम दूध - १ लीटर
- लौकी - ५०० ग्राम
- घी - एक टेबल स्पून
- काजू - १० (हर काजू को ६-७ टुकड़ों में काट लें)
- किशमिश - २५-३० (डंठल तोड़कर धो लें)
- चीनी - ८०-१०० ग्राम (आधा कप से थोड़ा कम)
- इलाइची - ४-५ (छील कर पीस लें)
- बादाम - ४ (लंबे व बारीक कतर लें)

विधि:

सबसे पहले किसी भारी तले के बर्तन में दूध को गर्म होने के लिये रख दीजिये।

उसके बाद लौकी को छीलिये, धोइये, उसके अंदर के बीज निकालिये और फिर कद्दूकस करके निचोड़ लीजिये।

अब किसी माइक्रोवेव सेफ प्याले में यह लौकी और घी डाल कर ५ मिनट माइक्रोवेव कर लीजिये या फिर किसी पैन में घी गर्म करके लौकी डाल दीजिये और ५-६ मिनट तक कलछी से चला-चला कर भून लीजिये।

गैस पर रखे दूध में उबाल आ जाए तो उसमें भुनी हुई लौकी, काजू व किशामिश डाल कर उबाल आने तक चमचे से चलाइये और फिर गैस धीमी करके खीर को पकने दीजिये। हर ३-४ मिनट के बाद चमचे से चलाइये और खीर को तब तक पकाइये जब तक कि खीर को चमचे से गिराने पर लौकी व दूध एक साथ ना गिरने लगे। उसके बाद खीर में चीनी मिला कर ३-४ मिनट तक पकाइये और फिर गैस बंद करके इलाइची पाउडर भी मिला दीजिये।

लौकी की खीर तैयार है। अब इसे किसी प्याले में निकाल कर कतरे हुए बादाम से सजाइये और गरमा गरम या ठंडा करके परोस कर खाइये।

सुझाव:

- लौकी की खीर को दूध में कंडैंस्ड मिल्क मिलाकर भी बना सकते हैं और यदि आप इसे कंडैंस्ड मिल्क मिला कर बना रहे हैं तो खीर में चीनी या तो बहुत कम डालें या फिर ना डालें क्योंकि कंडैंस्ड मिल्क पहले से ही मीठा होता है।
- लौकी की खीर में सूखे मेवे अपनी पसंद से घटा-बढा लें अर्थात जो मेवे पसंद हों उन्हें डाल लें और जो ना पसंद हो उन्हें हटा दें।

रोगों के उपचार में सूर्य की भूमिका

वैदिक ज्यातिष के अनुसार, उन नौ ग्रहों में से सूर्य ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण ग्रह है जो व्यक्ति के जीवन को सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं। आधुनिक विज्ञान भी इस बात को प्रमाणित करता है कि सूर्य पर ही पूरा जीवमंडल आश्रित है और यही पृथ्वी पर पूरे जीवन चक्र को चलाने वाली मुख्य शक्ति है। यह जानना उचित होगा कि प्रचीन वैदिक शास्त्र में सूर्य को क्या स्थान दिया गया था।

वैदिक साहित्य में सूर्य को जीवनदाता और जीवनपालक कहा जाता है। 'मत्स्य पुराण' के अनुसार, 'आरोग्यम भास्करादिच्छेत' (सूर्य अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने वाला है)। भारत के ज्ञानियों और संतों ने सूर्य की उपासना की कई विधियां बताई हैं। जिनमें से एक है 'सूर्य नमस्कार'। उगते हुए सूरज की पहली किरण को न सिर्फ मानव बल्कि अन्य पशुओं और वनस्पतियों की सेहत के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। इस किरण में बीमारियां पैदा करने वाले तत्वों को खत्म कर अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने की शक्ति होती है। 'ऋगवेद' के अनुसार, उगते हुए सूर्य की पहली किरण हृदय रोग, पीलिया तथा अनीमिया आदि को ठीक कर सकती है। इसी प्रकार 'अथर्ववेद' में भी सूर्य की इन किरणों को हृदय संबंधी बीमारियों तथा अनीमिया आदि रोगों से ग्रस्त व्यक्ति के लिए बहुत लाभदायक माना गया है। यही कारण है कि वेदों में सूर्योदय के समय पूर्व की ओर मुख करके सूर्य की उपासना करने का बहुत महत्व बताया गया है। जब सूर्योदय होता है, उस समय व्यक्ति के सीने पर पड़ने वाली इसकी सीधी किरणें बहुत स्वास्थ्यवर्धक होती हैं। सूर्य की किरणें दिन के किसी भी समय इतनी प्रभावशाली और लाभदायक नहीं होतीं जितनी कि सुबह के समय होती हैं।

अथर्ववेद के नौवें अध्याय में ऐसी २२ बीमारियों का उल्लेख है जो उगते सूर्य की किरणों से ठीक हो सकती हैं। इनमें से कुछ आम बीमारियां हैं- सिरदर्द, कान का दर्द, अनीमिया, सिर की बीमारियां, बहरापन, अंधापन, सभी प्रकार का शारीरिक दर्द, जोड़ों की जकड़न, सभी प्रकार का बुखार, पीलिया, पेट की बीमारियां, पॉयज़निंग, वात और पित्त के असंतुलन से होने वाली बीमारियां, गुर्दों संबंधी बीमारियां, हड्डियों, कार्टिलेज, आंतों, गुप्तांग, क्षय रोग, घावों, घुटनों, जांघों, रीढ़ की हड्डी संबंधी रोग, तथा कुष्ठ रोग आदि। अथवर्वेद में आगे लिखा गया है कि सूर्य की किरणों में रहना अमृत के संसार में रहने के समान है। ऋगवेद में भी इस बारे में यही कहा गया है कि सूर्य की किरणें प्राणियों को लंबी आयु प्रदान करती हैं। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार सूर्य अपने सात घोंड़ों वाले रथ पर सवार होकर आकाश में पूर्व से पश्चिम की ओर गति करता है। सूर्य रथ के यह सात घोड़े इसकी सात प्रकार की किरणों के समान हैं। आधुनिक विज्ञान ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि सूर्य प्रकाश में सात रंगों की किरणों का सूमेल होता है जो सूर्य से पैदा होती हैं। इनमें से प्रत्येक रंग की किरण (ऋँडभ्दें) में खास चिकित्सकीय गुण मौजूद होते हैं। अथर्ववेद में बताई गई बहुत सी बीमारियां काफी साधारण बीमारियां हैं। जन्म संबंधी कुंडली में सूर्य का स्थान और स्थिति इन बीमारियों की ओर संकेत करते हैं। यहां तक कि कुंडली में सूर्य की स्थिति इन बीमारियों से ग्रस्त रहने की समय अवधि के बारे में जानकारी प्रदान करती है। यह जानकारी किसी ज्योतिषी की मदद से कुंडली के आकलन द्वारा प्राप्त की जा सकती है। सूर्य उपासना बेहद लाभदायक होती है। अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में सूर्य कमज़ोर हो तो उस व्यक्ति के लिए सूर्य उपासना और भी जरूरी हो जाती है। ऐसे में उस व्यक्ति के लिए सूर्य की उपासना करना बेहद लाभदायक रहता है।

घर बैठे सृष्टी एग्रो मंगने के लिए भर कर भेजें

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम:..
संस्था का नाम:..
पूरा पता:..
ग्राम :.................................तहसील :..

जिला:.................................राज्य:...........................पिन कोड

दूरभाष कार्य:.................................निवास:...................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :१५० | तीन वर्ष३५०: | पांच वर्ष :५००

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.................................

बैंक का नाम:................................ ड्राफ्ट चेक क्रमांक:......................दिनांक:...............

स्थान:................................ प्रतिनिधि का नाम:......................हस्ताक्षर सदस्य:...............

दिनांक:.......................

सृष्टी एग्रो

ग्रामिण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर | एवं संस्था सील

भव्य वितरक सम्मेलन

विश्वविख्यात कीटनाशक निर्माता कंपनी भारत इन्सेक्टीसाईड्स लिमिटेड द्वारा जयपुर केहोटल कंट्री इन में भव्य वितरक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें कंपनी के (निदेशक) श्री एम.पी. गुप्ता, (महाप्रबंधक-मार्केटिंग) श्री सुरेंद्र मट्टु, (उप प्रबंधक-मार्केटिंग डेव्हलपमेंट)श्री एन के शर्मा, सुश्री शिवांगी सूद, राजस्थान के प्रभारी श्री सर्दूल सिंह सहित राजस्थान के १३० वितरक बंधुओं ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम में कंपनी के निदेशक श्री एमपी गुप्ता ने उपस्थित वितरक बंधुओं से कहा कि आज के समय में किसानों को संपन्न एवं समृद्ध बनाने के लिए उच्च गुणवत्ता के उत्पाद ही उपलब्ध कराएं। भारत इन्सेक्टीसाईड्स लिमिटेड ही गुणवत्ता युक्त उत्पाद उपलब्ध करवाने के प्रति वचनवध है। भारत इन्सेक्टीसाईड लिमिटेड के उच्च गुणवत्ता के उत्पाद बाजार में वाजिब दामों पर उपलब्ध है। उन्होंने कंपनी के द्वारा शुरु किये गये नये कारखाने, जो गुजरात के 'दहेज' में स्थित है, के बारे में वितरकों को जानकारी दी। महाप्रबंधक (मार्केटिंग) श्री सुरेंद्र मट्टू ने कंपनी के राजस्थान में हो रही कंपनी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर कंपनी ने चार नये उत्पाद लॉच किए (उपमहाप्रबंधक-मार्केटिंग डेव्हलपमेंट) श्री एन के शर्मा ने चार नवीन उत्पाद निश्चय, पजेरो, मिजू व आघात के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर कंपनी द्वारा बिलसान विक्रय पर एक लक्की ड्रा का आयोजन किया गया।

विजेताओंको उपहार प्रदान किये गये एवं कंपनी की सफलता को ३५ वर्ष पूर्ण होने पर उपस्थित वितरकों को उपहार देकर शुभकामनाएं दी।

प्रोग्राम के समापन पर राजस्थान के प्रभारी श्री सर्दूल सिंह ने कंपनी से आए हुए पदधिकारियों एवं उपस्थित वितरक बंधुओं का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद किया।

बालिका शिक्षा को बढावा देने के लिए राज्य सरकार प्रयासरत है-मीणा

जयपुर, 30 जुलाई । सहकारिता मंत्री श्री परसादी लाल मीणा ने कहा कि बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किए जा रहे है। उन्होंने कहा कि शिक्षा से ही व्यक्ति, क्षेत्र, प्रदेश व देश का विकास संभव है।

श्री मीणा मंगलवार को दौसा जिले के लालसोट क्षेत्र में नवक्रमोन्नत रामावि चौण्डियावास, राउप्रावि उगरियावास व राउप्रावि लाडपुरा विद्यालयों के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि लालसोट को शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बनाने के लिये हर सज़्भव प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है सभी युवा शिक्षा के क्षेत्र में आगे आकर पढें, पढ़ावें तथा परिजनों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलायें। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में राज्य सरकार द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्यो की जानकारी देते हुये बताया कि लालसोट क्षेत्र तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में पिछडा हुआ था और राज्य सरकार ने युवाओं की इस समस्या को ध्यान में रखते हुये ही क्षेत्र के विद्यालयों में गणित व विज्ञान विषय खुलवायें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार गरीबों व किसानों को सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करवाने के हर संभव प्रयास कर रही है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की कथनी एवं करनी में कोई अन्तर नहीं है। साढे चार वर्ष के शासनकाल में राज्य सरकार ने अनेकों महत्वपूर्ण कार्य किए है। गरीब व किसान के विकास के लिये राज्य सरकार ने ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से बिना ज़्याज के डेढ़ लाख रुपये तक के सहकारी ऋण उपलध करवाने की व्यवस्था की है। किसान व गरीब अपने क्षेत्र की ग्राम सेवा सहकारी समितियों से जुड़ कर बिना ज़्याज का फसली ऋण प्राप्त कर सकते है। उन्होंने कहा कि लालसोट में महिला कॉलेज की घोषणा कर दी है अब महिलाओं को आगे उच्च पढाई के लिए बहार जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उन्होंने कहा कि विद्यालयों में रिक्त पड़े शिक्षकों के पदों को 15 अगस्त तक डीपीसी के माध्यम से भर दिया जाएगा। श्री मीणा ने नवक्रमोन्नत राउप्रावि लाडपुरा में आयोजित समारोह में विद्यालय में दो कमरे मय बरामदा निर्माण करवाये जाने की घोषणा की है। इसी तरह चौण्डियावास की रामावि में पेयजल निराकरण के लिये एक सिंगल पोइंट लगाने की भी घोषणा की है। इस अवसर पर पंचायत समिति लालसोट के प्रधान श्री गंगा सहाय बैरवा ने कहा कि आमजन के सर्वांगीण विकास के लिये राज्य सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे है। उन्होंने कहा कि किसानों को समय पर खाद, बीज, दवाइयां, सहकारी ऋण समय पर उपलध करवाने के लिए लालसोट विधानसभा क्षेत्र की 45 ग्राम पंचायतों में ग्राम सेवा सहकारी समितियों का गठन किया गया है।

नगरपालिका लालसोट के चेयरमेन श्री दिनेश मिश्र ने कहा कि आमजन के सर्वांगीण विकास के लिये राज्य सरकार द्वारा प्रयास किए जा रहे है।

कृषि विभाग, झज्जर के उप मण्डल अधिकारी, रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया

चण्डीगढ़, १७ जुलाई - हरियाणा राज्य चौकसी ब्यूरो ने कृषि विभाग, झज्जर के उप मण्डल अधिकारी, चरण पाल चौहान को गांव डावला, जिला झज्जर के श्री राज कुमार से ३,००० रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा है। राज्य चौकसी ब्यूरो के एक प्रवक्ता ने आज यह जानकारी देते हुए बताया कि यह रिश्वत उसने सब्सिडी फार्म पर हस्ताक्षर करने की एवज में ली थी। उसके खिलाफ भ्रष्टाचार उन्मूलन अधिनियम,१९८८ की धारा ७ के तहत चौकसी ब्यूरो के रोहतक स्थित पुलिस थाने में प्राथमिक सूचना रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और मामले की जांच जारी है।

प्रदेश के कपास उत्पादक क्षेत्रों के किए गए सर्वेक्षण की रिपोर्ट के मुताबिक कपास को नुकसान पहुंचाने वाले ज्यादातर कीटों की संख्या फिलहाल काफी कम ;चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

चंडीगढ़, १७ जुलाई- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कीट वैज्ञानिकों की टीम द्वारा प्रदेश के कपास उत्पादक क्षेत्रों के किए गए सर्वेक्षण की रिपोर्ट के मुताबिक कपास को नुकसान पहुंचाने वाले ज्यादातर कीटों की संख्या फिलहाल काफी कम है। परंतु वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को इन कीटों के प्रति सचेत रहने की सलाह दी गई है। विश्वविद्यालय के प्रवक्ता ने बताया कि विश्वविद्यालय के कीट वैज्ञानिकों डॉ. पालाराम तथा डॉ. कृष्णा रोलानिया की टीम ने कपास की फसल पर कीटों के प्रकोप का जायज़ा लेने के लिए हाल ही में प्रदेश के कपास उत्पादक हिसार, फतेहाबाद तथा सिरसा जिलों के १८ गांवों के ३६ खेतों का सर्वेक्षण किया जिसमें पाया गया कि कपास में लीफ हॉपर कीट के निंफ व प्रौढ़ों की संख्या आर्थिक कगार से काफी कम है जबकि सफेद मक्खी के प्रौढ़ों की संख्या बरवाला, मोहम्मदपुर रोही तथा भोडिया खेड़ा गांवों को छोड़ शेष सभी गांवों में आर्थिक कगार से कम पाई गई है। सोलनोपसिस मीलीबग की उपस्थिति केवल तीन खेतों में नाम मात्र दर्ज की गई है जबकि इसकी एक अन्य प्रजाति-ड्रोसिका का प्रकोप केवल चिंधड़ गांव के खेत में सड़क के साथ लगते पौधों पर ही देखा गया है। वैज्ञानिकों ने यह सर्वेक्षण रिपोर्ट विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.एस. सिवाच को सौंपी है। प्रवक्ता ने बताया कि फिलहाल कपास में मीलीबग कीट का प्रकोप बढ़ने की संभावना नहीं है क्योंकि इस रिपोर्ट के मुताबिक सभी प्रभावित पौधों पर मीलीबग के साथ एनासियस नामक परजीवी भी उपस्थित है जो मीलीबग को नष्ट कर देगा। किसानों को मीलीबग के लिए कीटनाशक दवा का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने बताया कि यदि आगामी पखवाड़े में बार-बार वर्षा हुई तथा औसत आपेक्षिक आर्द्रता ७० प्रतिशत से ज्यादा रही तो कपास पर लीफ हॉपर कीट का प्रकोप बढ़ सकता है जबकि सफेद मक्खी की जनसंख्या कम या मध्यम स्तर तक रह सकती है । दूसरी तरफ १५ या इससे अधिक दिनों तक वर्षा न होने की स्थिति में सफेद मक्खी की जनसंख्या तेजी से बढ़ सकती है जिस पर निंबेसिडिन ३०० पीपीएम दवा की एक लीटर मात्रा प्रति एकड़ की दर से एक सप्ताह के अंतर पर दो बार स्प्रे करके नियन्त्रण पाया जा सकता है । उन्होंने कहा वर्तमान मौसमी परिस्थितियां बालों वाली लाल सूण्डी के बढ़ने के लिए बहुत अनुकूल हैं । इसलिए जहां विशेषकर रेतीले क्षेत्रों में इस कीट की समस्या हो, वहां विश्वविद्यालय द्वारा सिफारिश की गई कीटनाशक दवाओं से इसकी रोकथाम की जा सकती है। उन्होंने बताया कि धान में भी पत्ती मरोड़ कीट का प्रकोप हो सकता है ।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-६२ से मुद्रीत किया और ३०७, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - ४०००६४ यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-09829220788,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com